- 19th Year
- Issue: 257
- 24.01.2026 SATURDAY)
- ROURKELA
- R.N.I. No. ORIHIN/2006/18978
- (Pages-6)
- Price:2.00

e-paper-www.thekalingasamachar.com

दैनिक

कलिंग समाचार

The kalingasamachar

प्रकाशक एवं संपादक : प्रकाश कुमार धल

Published From ODISHA, JHARKHAND & CHHATTISHGARH

दक्षिण की पथरीली जमीन पर कमल खिलने उतरे मोदी, केरल और तमिलनाडू में तेज हुआ सत्ता का संग्राम

चेन्नई २३/०१ (संवाददाता): दक्षिण की पथरीली जमीन पर कमल खिलाने के इरादे से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने आज केरल और तमिलनाडु का सघन दौरा कर भाजपा के नेतृत्व वाले राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन के चुनावी अभियान का शंखनाद कर दिया। दोनों राज्यों में आगामी विधानसभा चुनावों से पहले प्रधानमंत्री का यह दौरा राजनीतिक संकेतों से भरा रहा जहां विकास परियोजनाओं के उद्घाटन व शिलान्यास के साथ-साथ विपक्ष पर तीखे प्रहार भी किए गए। केरल में प्रधानमंत्री ने राजधानी तिरुवनंतपुरम में भव्य रोड शो से शुरुआत की। केरल में हालिया निकाय चुनावों में भाजपा के बेहतर प्रदर्शन और तिरुवनंतपुरम के मेयर पद पर काबिज होने की वजह से पार्टी कार्यकर्ताओं में नया उत्साह भर गया है। इसी पृष्ठभूमि में मोदी ने रेल परियोजनाओं को हरी झंडी दिखाई और कई विकास कार्यों की आधारशिला रखी। सार्वजनिक सभा में उन्होंने केंद्र सरकार की योजनाओं का उल्लेख करते हुए कहा कि विकास और सुशासन के साथ केरल को नई दिशा दी जा सकती है।

प्रधानमंत्री मोदी ने केरल में सज़ारुढ़ वाम मोर्चे पर निशाना साधते हुए शबरिमला में सोना गायब होने का मुद्दा तो उठाया ही साथ ही उन्होंने मुस्लिम लीग के साथ कांग्रेस के संबंधों को लेकर उस पर भी हमला बोला और आरोप लगाया कि वह राज्य में कट्टरपंथी तत्वों को बढ़ावा दे रही है। रैली के दौरान एक बच्चे का प्रधानमंत्री का स्केच हाथ में उठाए लंबे समय तक खड़े रहना भी चर्चा का विषय बना। मंच से मोदी का मानवीय संवाद इस दौरे की सहज तस्वीर पेश करता दिखा।

तमिलनाडु में प्रधानमंत्री का रुख अधिक आक्रामक रहा। एनडीए की रैली में उन्होंने सज़ारुढ़ द्रविड मुनेत्र कझगम यानि द्रमुक पर परिवारवाद, भ्रष्टाचार, महिला अपमान और तमिल संस्कृति को कमजोर करने के आरोप लगाए। मोदी ने कहा कि सज़ा की यह राह राज्य के मूल्यों और विकास को नुकसान पहुंचा रही है। इसके उलट एनडीए को उन्होंने ईमानदारी, महिला सज़्मान और सांस्कृतिक गौरव पर आधारित विकल्प बताया।प्रधानमंत्री ने अपने संबोधन में तमिलनाडु की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक विरासत का विस्तार से उल्लेख किया। संगम साहित्य, प्राचीन वैज्ञानिक परंपराएं, भव्य मंदिर और आधुनिक तकनीकी

योगदान को उन्होंने भारत की सज्यता की रीढ़ बताया। चेन्नई के निकट चेंगलपट्टु और मदुरांतकम की सभाओं में उन्होंने कहा कि विकसित भारत के लक्ष्य में तमिलनाडु की भूमिका निर्णायक होगी। केंद्र सरकार द्वारा पिछले ग्यारह वर्षों में राज्य के लिए किए गए कार्यों का जिक्र करते हुए उन्होंने आरोप लगाया कि पूर्व की यूपीए सरकारों ने तमिलनाडु को अपेक्षित संसाधन नहीं दिए।

मोदी ने पूर्व मुज्यमंत्री जे. जयललिता के शासन की सराहना करते हुए कानून व्यवस्था को मजबूत करने का श्रेय दिया और वर्तमान दौर में महिलाओं की सुरक्षा को लेकर चिंता जताई। पोंगल के उत्सव और एमजी रामचंद्रन की जयंती का स्मरण कर उन्होंने स्थानीय भावनाओं से जुड़ने की कोशिश की। हर मंच से उनका संदेश साफ था कि तमिलनाडु बदलाव के लिए तैयार है।

हम आपको यह भी बता दें कि केरल में राजनीतिक समीकरणों को मजबूत करते हुए प्रधानमंत्री ने उद्योगपति साबु एम जैकब से मुलाकात की और उनके ट्वेंटी ट्वेंटी संगठन के एनडीए में शामिल होने का स्वागत किया। वर्कला में सिवगिरि मठ और श्री नारायण गुरु परंपरा से जुड़े संतों से भेंट कर उन्होंने सामाजिक समरसता और समानता के संदेश को भी रेखांकित किया।

देखा जाये तो दक्षिण भारत लंबे समय से भाजपा के लिए चुनौतीपूर्ण क्षेत्र रहा है। केरल और तमिलनाडु में मजबूत वैचारिक परंपराएं क्षेत्रीय अस्मिता और गठबंधन राजनीति का ऐसा ताना बाना रचती रही हैं जहां राष्ट्रीय दलों के लिए जगह बनाना आसान नहीं रहा। ऐसे में प्रधानमंत्री मोदी का यह दोहरा दौरा केवल चुनावी यात्रा नहीं बल्कि रणनीतिक दांव भी है। केरल में हालिया स्थानीय निकाय सफलता ने भाजपा को यह भरोसा दिया है कि संगठन विस्तार और विकास के एजेंडे के सहारे वह अपनी जमीन बढ़ा सकती है। मोदी का रोड शो और सामाजिक संगठनों से संवाद इस बात का संकेत है कि पार्टी केवल चुनावी भाषणों तक सीमित नहीं रहना चाहती, बल्कि वह समाज के प्रभावशाली वर्गों को साथ जोड़ने की कोशिश में भी है।

तमिलनाडु में तस्वीर और भी दिलचस्प है। यहां भाजपा अकेले दम पर नहीं बल्कि सभी विपक्षी दलों को साथ लाकर मजबूत एनडीए के रूप में मैदान में उतरना चाहती है। द्रमुक पर परिवारवाद और भ्रष्टाचार के हमले के साथ-साथ तमिल गौरव का सज़्मान नहीं करने का आरोप बताता है कि भाजपा स्थानीय पहचान को साधने की रणनीति अपना रही है। जयललिता और एमजी रामचंद्रन जैसे लोकप्रिय चेहरों का उल्लेख कर मोदी ने उस भावनात्मक खाली जगह को भरने का प्रयास किया है जिसे द्रमुक और अन्नाद्रमुक दशकों से भुनाते रहे हैं।

फिर भी राह आसान नहीं है। तमिलनाडु में द्रमुक की मजबूत सांगठनिक पकड़ और केरल में वामपंथी परंपरा भाजपा के सामने बड़ी चुनौती बनी रहेगी। लेकिन मोदी का यह सघन दौरा यह स्पष्ट करता है कि पार्टी अब दक्षिण में हाशिये पर नहीं रहना चाहती। विकास, संस्कृति और सुशासन के त्रिकोण पर आधारित भाजपा का यह अभियान यदि जमीनी स्तर पर संगठनात्मक मजबूती के साथ आगे बढ़ता है तो पथरीली जमीन पर कमल खिलने की संभावना से इंकार नहीं किया जा सकता।

शशि थरूर का बगावती तेवर! कोच्चि में हुए अपमान के बाद कांग्रेस की हाई-लेवल बैठक से बनाई दूरी

नयी दिल्ली २३/०१ (संवाददाता): केरल विधानसभा चुनाव की तैयारियों में जुटी कांग्रेस पार्टी के लिए एक बड़ी मुश्किल खड़ी हो गई है। पार्टी के दिग्गज नेता और तिरुवनंतपुरम से सांसद शशि थरूर ने राज्य चुनाव की रणनीति तय करने के लिए कांग्रेस आलाकमान द्वारा बुलाई गई एक महत्वपूर्ण बैठक में शामिल न होने का फैसला किया है। सूत्रों के अनुसार, थरूर का यह कदम हाल ही में कोच्चि में आयोजित एक कार्यक्रम के दौरान हुए %अपमान% के प्रति उनके कड़े विरोध को दर्शाता है।सूत्रों के अनुसार, यह फैसला तब लिया गया जब थरूर को कोच्चि में एक महापंचायत कार्यक्रम में 卐अपमानित महसूस हुआ, जहां पार्टी सांसद राहुल गांधी भी मौजूद थे। अहम चर्चा मीटिंग से थरूर की गैरमौजूदगी हाई-स्टेक वाले राज्य चुनावों से पहले पार्टी के अंदरूनी मतभेद का संकेत देती है।कांग्रेस सूत्रों

ने संकेत दिया है कि वह फिलहाल कांग्रेस के राज्य और केंद्रीय नेतृत्व दोनों से नाराज़ हैं, जिसके कारण उन्होंने मीटिंग में शामिल न होने का फैसला किया है। रिपोर्ट्स के अनुसार, थरूर ने अपने करीबी सहयोगियों को अपनी निराशा बताई है, और कहा है कि यह घटना पार्टी के अंदर उनके योगदान की अनदेखी के एक बड़े पैटर्न को दिखाती है।कोच्चि इवेंट में, बैठने और बोलने के शेड्यूल को लेकर दिक्कतें आईं। रिपोर्ट्स के अनुसार, थरूर को बताया गया था कि उनके बाद सिर्फ राहुल गांधी बोलेंगे, लेकिन बाद में दूसरे नेताओं ने भी भाषण दिया। व्यवस्थाओं को लेकर यह कन्ज़्यूजन सार्वजनिक अपमान के तौर पर देखा गया, खासकर कांग्रेस में थरूर की वरिष्ठता को देखते हुए।शुरुआती निर्देश के बावजूद, राहुल गांधी के आने के बाद कई अन्य पार्टी नेताओं ने कार्यक्रम को संबोधित किया। रिपोर्ट्स के अनुसार, तय प्लान से यह बदलाव थरूर की नाराजगी का कारण बना, खासकर वक्ताओं के क्रम के संबंध में प्रोटोकॉल के उल्लंघन को देखते हुए।इस घटना ने पार्टी कार्यकर्ताओं के बीच आंतरिक अनुशासन और वरिष्ठ नेताओं के सज़्मान के बारे में चर्चा शुरू कर दी है। महापंचायत में अपने भाषण के दौरान, राहुल गांधी ने थरूर का नाम नहीं लिया।

कोई और बांध रहा था गमछा, शिवराज सिंह ने राहुल गांधी के मजदूर बनने पर कसा तंज

नयी दिल्ली २३/०१ (संवाददाता): केंद्रीय मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने शुक्रवार को विपक्ष के नेता राहुल गांधी पर तीखा हमला बोलते हुए उन पर विकसित भारत-रोजगार एवं आजीविका मिशन (ग्रामीण) अधिनियम को लेकर नाटक करने का आरोप लगाया और कहा कि कांग्रेस सांसद को इस कानून का नाम तक नहीं पता। चौहान ने ट्विटर पर राहुल गांधी के उस भाषण का एक वीडियो साझा किया, जो उन्होंने रचनात्मक कांग्रेस द्वारा आयोजित राष्ट्रीय एमजीएनआरईजीए श्रमिक सज़्मेलन में दिया था। इस वीडियो में राहुल गांधी को यह कहते हुए सुना जा सकता है कि उन्हें नए अधिनियम का नाम नहीं पता।

कांग्रेस नेता पर कटाक्ष करते हुए चौहान ने लिखा कि संसद के दोनों सदनों में विधेयक पर देर रात तक विस्तृत चर्चा हुई, जिसमें सज़ा पक्ष और विपक्ष दोनों ने सक्रिय रूप से भाग लिया और पूरा देश इस बहस को ध्यान से

देख रहा था। उन्होंने आरोप लगाया कि इन चर्चाओं के दौरान विपक्ष के नेता अनुपस्थित थे और राहुल गांधी की इस विधेयक से अनभिज्ञता के बावजूद कांग्रेस अब इस पर नाटक कर रही है। शिवराज चौहान की पोस्ट में लिखा था, राहुल जी कितने ज्ञानी हैं! वीबी - श्री राम जी पर दोनों सदनों में देर रात तक घंटों चर्चा हुई। सज़ा पक्ष और विपक्ष ने हर पहलू पर गंभीर बहस की। पूरा देश देख और सुन रहा था। लेकिन उस समय विपक्ष के नेता विदेश दौरे पर व्यस्त थे। अब कांग्रेस इस अधिनियम पर संघर्ष का नाटक कर रही है, जबकि विपक्ष के नेता को खुद विधेयक का नाम तक नहीं पता।

कर्नाटक में दौड़ेगी बाइक टैक्सी, हाईकोर्ट ने राज्य सरकार का प्रतिबंध हटाया, ओला-उबर और रैपिडो को बड़ी राहत

बेंगलुरु २३/०१ (संवाददाता): चीफ जस्टिस विभू बखरू और जस्टिस सीएम जोशी की अध्यक्षता वाली एक डिवीज़न बेंच ने ओला, उबर और रैपिडो सहित एग्रीगेटर्स द्वारा दायर अपीलों को मंज़ूरी दी, और फैसला सुनाया कि कानूनी अनुमतियों के अधीन बाइक का इस्तेमाल ट्रांसपोर्ट वाहनों के रूप में किया जा सकता है। कोर्ट ने अप्रैल 2025 के बैन के आदेश को खारिज कर दिया और बाइक मालिकों और एग्रीगेटर्स को लाइसेंस के लिए आवेदन करने का निर्देश दिया, और सरकार को मौजूदा कानूनों के अनुसार परमिट जारी करने का निर्देश दिया।

कोर्ट ने कहा कि हालांकि राज्य आवेदनों के सभी प्रासंगिक पहलुओं की जांच कर सकता है, लेकिन वह सिर्फ इसलिए टैज़्सी रजिस्ट्रेशन से इनकार नहीं कर सकता ज़्योंकि वाहन एक मोटरसाइकिल है।

आदेश में कहा गया है,

卐टैज़्सी मालिकों को मोटरसाइकिलों को ट्रांसपोर्ट वाहनों या कॉन्ट्रैज़्ट कैरिज के रूप में रजिस्टर करने के लिए आवेदन करने की अनुमति है, और राज्य को कानून के अनुसार इन आवेदनों पर विचार करना चाहिए। एग्रीगेटर्स भी नए आवेदन जमा करने के लिए स्वतंत्र हैं, जिन पर कोर्ट की टिप्पणियों के बाद कार्रवाई की जानी चाहिए।बाइक टैज़्सी सेवाओं पर राज्य का पूरी तरह से बैन पिछले साल जून में लागू हुआ था।

कर्नाटक सरकार ने हाई कोर्ट के एक फैसले के बाद बैन लागू किया था, जिसने पहले के एक सरकारी आदेश को सही ठहराया था, जिसमें रैपिडो, ओला और उबर मोटो जैसे प्लेटफॉर्म को अवैध घोषित किया गया था, जिसमें एक स्पष्ट नियामक ढांचे की कमी का हवाला दिया गया था।

उस समय, एग्रीगेटर्स ने मुज़्यमंत्री सिद्धारमैया और कांग्रेस सांसद राहुल गांधी से अपील की थी, और बैन को रोकने के लिए तत्काल हस्तक्षेप का आग्रह किया था, चेतावनी दी थी कि इससे लाखों लोगों की आजीविका खतरे में पड़ जाएगी और लाखों लोगों के लिए सस्ती दैनिक यात्रा बाधित होगी।

गणतंत्र दिवस परेड में शक्तिबान रेजिमेंट पहली बार होंगी शामिल

नयी दिल्ली २३/०१ (संवाददाता): इस वर्ष गणतंत्र दिवस परेड में 6,000 से अधिक सैन्यकर्मी भाग लेंगे, जिनमें भैरव बटालियन और शक्तिबान रेजिमेंट पहली बार शामिल होंगी। दिल्ली क्षेत्र के चीफ ऑफ स्टाफ मेजर जनरल नवराज ढिल्लों ने यहां मीडिया से बातचीत करते हुए बताया कि दिल्ली क्षेत्र के जीओसी लेज़्टिनेंट जनरल भवनीश कुमार चौथी बार परेड का नेतृत्व करेंगे। उन्होंने कहा कि भैरव बटालियन और शक्तिबान रेजिमेंट पहली बार परेड में भाग लेंगी, साथ ही लद्दाख स्काउट्स भी शामिल होंगे। पतंग, जांस्कर टट्टू और बैज़्ट्रियन ऊंट भी पहली बार गणतंत्र दिवस परेड में हिस्सा लेंगे।

शुक्रवार को नई दिल्ली के कर्तव्य पथ पर गणतंत्र दिवस परेड का पूर्ण-नृत्य पूर्वाज़्यास किया गया। गणतंत्र दिवस की पूर्वाज़्यास के लिए मध्य दिल्ली की कुछ सड़कों को बंद कर दिया गया था। 26 जनवरी को नई दिल्ली में आयोजित होने

वाले 77वें गणतंत्र दिवस परेड में राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों (ऊह्य) की 17 और मंत्रालयों, विभागों और सेवाओं की 13 सहित कुल 30 झांकियां कर्तव्य पथ पर निकलेंगी। रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी एक विज्ञप्ति के अनुसार, गणतंत्र दिवस समारोह में स्वतंत्रता का मंत्र-वंदे मातरम और समृद्धि का मंत्र-आत्मनिर्भर भारत विषयों पर आधारित भव्य प्रदर्शन किया जाएगा।

ये झांकियां राष्ट्रीय गीत वंदे मातरम के 150 वर्षों के इतिहास और देश की समृद्ध और जीवंत सांस्कृतिक विविधता में डूबी विभिन्न क्षेत्रों में बढ़ती आत्मनिर्भरता के बल पर हुई तीव्र प्रगति का अनूठा मिश्रण प्रस्तुत करेंगी।

रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) कर्तव्य पथ और भारत पर्व 2026 के अवसर पर गणतंत्र दिवस परेड में राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए किए गए अपने कुछ अभूतपूर्व आविष्कारों का प्रदर्शन करेगा।

लंबी दूरी की शिप-रोधी हाइपरसोनिक मिसाइल (एलआर-एएसएचएम) के प्रदर्शन के अलावा, डीआरडीओ %लड़ाकू पनडुज़्बियों के लिए नौसेना प्रौद्योगिकी नामक एक झांकी भी प्रस्तुत करेगा।

इस वर्ष, भारतीय वायु सेना गणतंत्र दिवस समारोह से संबंधित सभी औपचारिक कार्यक्रमों के संचालन का नेतृत्व कर रही है।

गणतंत्र दिवस पर पाकिस्तानी ड्रोन हमले का साया! पंजाब, जमू-कश्मीर और राजस्थान बॉर्डर पर हाई अलर्ट, सुरक्षा एजेंसियां चौकस

नयी दिल्ली २३/०१ (संवाददाता): देश के 77वें गणतंत्र दिवस समारोह से ठीक पहले सुरक्षा एजेंसियों ने पाकिस्तान से लगी सीमाओं पर हाई-लेवल अलर्ट जारी किया है। खुफिया इनपुट के अनुसार, आतंकी संगठन जैश-ए-मोहज़्मद और लश्कर-ए-तैयबा पंजाब, जज़्मू-कश्मीर और राजस्थान के सीमावर्ती इलाकों में ड्रोन हमले या ड्रोन के जरिए हथियारों की बड़ी खेप भेजने की फिराक में हैं। इस खतरे को देखते हुए पूरी पश्चिमी सीमा को एक अभेद्य किले में तज़्दील कर दिया गया है।

सुरक्षा एजेंसियों ने आम नागरिकों से अपील की है कि वे किसी भी संदिग्ध उड़ती हुई वस्तु या लावारिस सामान (जैसे टिफिन, खिलौने या परज़्यूम की बोतलें) को न छुएं, ज़्योंकि आईईडी (द्बश्वष्ठ) को इन वस्तुओं के रूप में छिपाकर रखे जाने का इनपुट मिला है। जज़्मू-

कश्मीर प्रशासन ने सुरक्षा कारणों से पीर पंजाल रेंज के उच्च हिमालयी क्षेत्रों में ट्रेकिंग, कैंपिंग और हाइकिंग पर दो महीने के लिए प्रतिबंध लगा दिया है। जानकारी के अनुसार, चेतावनी में संवेदनशील इलाकों की कड़ी निगरानी और संभावित खतरों से निपटने के लिए ज़्यादा सतर्कता बरतने पर ज़ोर दिया गया है। सुरक्षा अधिकारियों को बॉर्डर पर ड्रोन गतिविधियों पर कड़ी नज़र रखने का निर्देश दिया गया है। खुफिया एजेंसियों को शक है कि ड्रोन का इस्तेमाल करके भारतीय इलाके में हथियार और विस्फोटक ह्यद्वह्लद्दद्यद्गस्त्र किए जा सकते हैं। यह अलर्ट खास तौर पर पंजाब, जज़्मू और कश्मीर और राजस्थान बॉर्डर पर है, जहां पहले भी संदिग्ध हवाई गतिविधि की खबरें आई हैं।

खुफिया इनपुट के अनुसार, आतंकवादी संगठन न सिर्फ ड्रोन बल्कि पैराग्लाइडर और हैंग ग्लाइडर का इस्तेमाल करके भी घुसपैठ की कोशिश कर सकते हैं। इनपुट से पता चलता है कि लश्कर-ए-तैयबा और कुछ सिख चरमपंथी संगठनों ने हाल ही में पैराग्लाइडिंग उपकरण और संबंधित डिवाइस खरीदे हैं।

इसके जवाब में, सुरक्षा बलों को पूरी तरह अलर्ट रहने का निर्देश दिया गया है। हवाई निगरानी बढ़ा दी गई है और ज़मीनी स्तर पर सुरक्षा व्यवस्था को और मज़बूत किया गया है। एजेंसियों को लगातार निगरानी रखने और यह सुनिश्चित करने का निर्देश दिया गया है कि कोई भी संदिग्ध गतिविधि ह्वठ्ठश्चह्लद्बष्द्गस्त्र न रहे, ज़्योंकि देश गणतंत्र दिवस परेड की तैयारी कर रहा है, जैसा कि डिटेल्स में बताया गया है।

इस बीच, एक अधिकारी ने बताया कि दिल्ली पुलिस गणतंत्र दिवस समारोह के लिए सुरक्षा उपायों को बढ़ाने के हिस्से के रूप में पहली बार इंटीग्रेटेड फेशियल रिकग्निशन सिस्टम (स्नक्रस्) और थर्मल इमेजिंग टेज़्नोलॉजी से लैस,द्ब-इनेबल्ड स्मार्ट ग्लास तैनात करेगी। एक भारतीय कंपनी द्वारा बनाए गए ये स्मार्ट ग्लास, अपराधियों, घोषित अपराधियों और संदिग्धों के पुलिस डेटाबेस से रियल-टाइम में जुड़े होंगे, जिससे ज़मीन पर मौजूद कर्मियों को भीड़भाड़ वाले इलाकों में लोगों की तुरंत पहचान करने में मदद मिलेगी।

एडिशनल कमिश्नर ऑफ पुलिस (नई दिल्ली) देवेश कुमार महला ने कहा कि ये पहनने योग्य डिवाइस पुलिस अधिकारियों द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाले मोबाइल फोन से कनेज़्ट होंगे, जिससे उन्हें सिस्टम के ज़रिए पूरे क्रिमिनल डेटाबेस तक एज़्सेस मिल जाएगा। एडिशनल छ्वक्क महला ने मीडिया को बताया, ये ग्लास अधिकारियों के मोबाइल फोन से जुड़े हैं, और मोबाइल फोन में अपराधियों का पूरा डेटाबेस होगा। अगर कोई हरे बॉज़्स में दिखता है, तो इसका साफ मतलब है कि उस व्यक्ति का कोई आपराधिक रिकॉर्ड नहीं है।

विविध समाचार

गणतंत्र दिवस पर इस बार होगा युद्ध भूमि जैसा अहसास!

नयी दिल्ली २३/०१ (संवाददाता): इस बार की गणतंत्र दिवस परेड सिर्फ कदमताल बैंड और झांकियों का आयोजन नहीं होगी बल्कि यह कर्तव्य पथ को प्रतीकात्मक युद्ध भूमि में बदल देने वाला अनुभव बनेगी। दर्शकों को ऐसा अहसास होगा मानो वह किसी सैन्य अभ्यास या वास्तविक संघर्ष की झलक देख रहे हों जहां आकाश में लड़ाकू विमान युद्ध क्रम में होंगे और जमीन पर सेना उसी क्रम में आगे बढ़ेगी जैसे दुश्मन से सामना करते समय बढ़ती है। इस बार की परेड परंपरा और प्रतीक से आगे जाकर शक्ति, संकल्प और तैयारी का जीवंत प्रदर्शन होगी जो साफ बताएगी कि भारत अब अपने गणतंत्र का उत्सव सिर्फ फूलों से नहीं बल्कि दृढ़ इच्छाशक्ति और युद्ध तत्परता के साथ मनाता है।

हम आपको बता दें कि 77वें गणतंत्र दिवस पर कर्तव्य पथ पर होने वाली परेड भारत की सैन्य चेतना, आत्मविश्वास और आक्रामक संकल्प का सार्वजनिक उद्घोष भी बनेगी। भारत के सफल ऑपरेशन सिंदूर के बाद यह पहला गणतंत्र दिवस है जिसमें भारतीय सशस्त्र बलों के शौर्य और पराक्रम पर विशेष जोर होगा। हम आपको बता दें कि 26 जनवरी को एक शानदार हवाई प्रदर्शन होगा, जिसमें 29 विमान भाग लेंगे। यह नया ज्लाइपास्ट भारतीय वायु सेना की युद्ध क्षमता और परिचालन तत्परता को दर्शाएगा। इस वर्ष का मुज्य आकर्षण %सिंदूर% नामक एक नया लड़ाकू विमान फॉर्मेशन है, जो पिछले वर्ष के पहलगाम आतंकी हमले के जवाब में किए गए सटीक सैन्य अभियान %ऑपरेशन सिंदूर% में वायु सेना की भूमिका को दर्शाएगा। इस फॉर्मेशन में दो राफेल लड़ाकू विमान, दो स्न्न-30 विमान, दो स्न्नक्त-29 और एक जगुआर शामिल हैं जिन्होंने ऑपरेशन सिंदूर% में भाग लिया था।

हम आपको बता दें कि पहली बार ज्लाइपास्ट को दो चरणों में विभाजित किया गया है। इनमें 16 फाइटर जेट, चार ट्रांसपोर्ट विमान और नौ हेलिकॉप्टर शामिल हैं। वज्रांग, वरुण, अर्जन, गरुड, प्रहार और ध्वज जैसे नामों वाले गठन वायु सेना की मारक क्षमता, समुद्री निगरानी, त्वरित परिवहन और आक्रमण क्षमता को प्रदर्शित करेंगे।

ज्लाइपास्ट में पी 8 आई समुद्री निगरानी विमान, सी 130 जे और सी 295 ट्रांसपोर्ट एयरक्राफ्ट, अपाचे और लाइट कॉज्बैट हेलिकॉप्टर भी शामिल होंगे। यह पूरा हवाई प्रदर्शन जमीन पर दिखाए जा रहे फेज्ड बैटल एरे प्रारूप से जुड़ा होगा।

साथ ही इस बार परेड में थल सेना भी पहली बार फेज्ड बैटल एरे फॉर्मेशन में कर्तव्य पथ पर उतरेगी।

इसका अर्थ है कि सेना की टुकड़ियां और स्वदेशी प्लेटफार्म उसी क्रम में आगे बढ़ेंगे जैसे वह वास्तविक युद्ध में तैनात होते हैं। सबसे आगे टोही, उसके बाद लॉजिस्टिक्स और फिर अग्रिम मोर्चे की इकाइयां रहेंगी। सभी सैनिक युद्धक पोशाक और साजो सामान के साथ नजर आएंगे। इसी क्रम में नई भैरव लाइट कमांडो बटालियन का भी गणतंत्र दिवस परेड में पदार्पण होगा। हम आपको बता दें कि यह बटालियन पिछले वर्ष अज्टूबर में गठित की गई थी और इसका उद्देश्य पैदल सेना और विशेष बलों के बीच की खाई को पाटना है। परेड में कुल 18 मार्चिंग कंटिंजेंट, 13 बैंड और 30 झांकियां होंगी। वायु सेना के बैंड में पहली बार नौ महिला अग्निवीर भी शामिल होंगी जो लैंगिक समानता की दिशा में एक ठोस संदेश है।

इस वर्ष परेड की प्रमुख थीम वंदे मातरम के 150 वर्ष पूरे होने की होगी। कर्तव्य पथ पर बने एन्क्लोजर में इसके शुरुआती पदों पर आधारित चित्र और पुष्प सज्जा होगी तथा इसके रचयिता बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय को श्रद्धांजलि दी जाएगी। हम आपको बता दें कि इस बार गणतंत्र दिवस पर मुज्य तथा विशिष्ट अतिथियों के रूप में यूरोपीय आयोग की अध्यक्ष ह्वह्म्ह्यह्वद्य 1श्ठ्ठ स्रद्गह्म् स्न4द्गठ्ठ और यूरोपीय परिषद के अध्यक्ष ्रठ्ठह्लशठ्ठद्बश ष्टशह्यह्लड्ड उपस्थित रहेंगे। इस बार एक और महत्वपूर्ण बदलाव यह है कि वीवीआईपी जैसे लेबल समाप्त कर दिए गए हैं। सभी एन्क्लोजर भारतीय नदियों के नाम पर होंगे जबकि बीटिंग रिट्रीट समारोह में भारतीय वाद्य यंत्रों के नाम पर एन्क्लोजर के नाम रखे जाएंगे।

देखा जाये तो गणतंत्र दिवस की परेड में ऑपरेशन सिंदूर को केंद्र में लाकर भारत ने यह स्पष्ट कर दिया है कि भारत पर हमला अब सैन्य प्रतिक्रिया को जन्म देता है। फेज्ड बैटल एरे का प्रयोग यह बताता है कि भारत अब परेड को खिलौना प्रदर्शन नहीं बल्कि युद्ध के अज्यास जैसा मंच बना रहा है।

यह सेना की मानसिकता में आए बदलाव का संकेत है जहां दिखावा नहीं तैयारी प्राथमिकता है। भैरव कमांडो बटालियन का पदार्पण भविष्य के युद्धों की झलक देता है। तेज हल्की और घातक इकाइयां आने वाले संघर्षों की जरूरत हैं। कुल मिलाकर गणतंत्र दिवस 2026 ऐलान है कि सिंदूर आसमान में है और उसका संदेश साफ है। जो आंख उठाएगा उसे जवाब मिलेगा और वह भी पूरी तैयारी के साथ।

केरल में नरेंद्र मोदी का एलडीएफ-यूडीएफ पर सीधा प्रहार, बोले- राज्य को भ्रष्टाचार के चक्र में फंसाया

तिरुवनंतपुरम २३/०१ (संवाददाता): प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शुक्रवार को तिरुवनंतपुरम नगर निगम में भाजपा की ऐतिहासिक जीत की सराहना करते हुए कहा कि यह वाम लोकतांत्रिक मोर्चा (एलडीएफ) और संयुक्त लोकतांत्रिक मोर्चा (यूडीएफ) द्वारा दशकों से की गई उपेक्षा का अंत और विकास एवं सुशासन के एक नए युग की शुरुआत है। पीएम मोदी ने भ्रष्टाचार और कुप्रबंधन को बढ़ावा देने के लिए दोनों मोर्चों की आलोचना भी की। केरल की राजधानी तिरुवनंतपुरम में एक सभा को संबोधित करते हुए पीएम मोदी ने कहा, एलडीएफ और यूडीएफ दोनों ने विभिन्न तरीकों से केरल को भ्रष्टाचार, कुप्रबंधन और तुष्टीकरण की राजनीति के चक्र में धकेल दिया है। भले ही वे अलग-अलग झंडे और चिन्हों का इस्तेमाल करते हों, लेकिन उनकी मूल राजनीतिक रणनीति और एजेंडा लगभग एक जैसे हैं- व्यापक भ्रष्टाचार, जवाबदेही का अभाव और विभाजनकारी सांप्रदायिकता को बढ़ावा देना। दोनों दल भली-भांति जानते हैं कि उन्हें हर पांच साल में सत्ता में आने का मौका मिलता है, फिर भी मूल मुद्दे अनसुलझे ही रहते हैं।मोदी ने आगे कहा कि दशकों से, एलडीएफ और यूडीएफ दोनों ने तिरुवनंतपुरम की उपेक्षा की है, जिससे शहर बुनियादी सुविधाओं और अवसंरचना से वंचित रहा है। वामपंथी और कांग्रेस लगातार हमारे लोगों की जरूरतों को पूरा करने में विफल रहे हैं।

हालांकि, हमारी भाजपा टीम ने पहले ही एक विकसित तिरुवनंतपुरम की दिशा में काम करना शुरू कर दिया है। इस शहर के लोगों से मैं कहता हूं- विश्वास रखें - वह बदलाव जो लंबे समय से प्रतीक्षित था, आखिरकार आने वाला है।

तिरुवनंतपुरम नगर निगम चुनावों में जीत का स्वागत करते हुए उन्होंने कहा कि यह जीत सुशासन की जीत है। यह जीत एक विकसित केरल के निर्माण के संकल्प की जीत है। यह जीत एलडीएफ और यूडीएफ के भ्रष्टाचार से केरल को मुक्त करने की प्रतिबद्धता की जीत है। प्रधानमंत्री मोदी ने केरल में भाजपा की शुरुआत और गुजरात में उसके शुरुआती सफर के बीच समानताएं बताईं। उन्होंने कहा कि यहाँ उपस्थित वामपंथी समूह शायद मुझे पसंद न करें। फिर भी, मुझे तथ्य प्रस्तुत करने दीजिए। 1987 से पहले, गुजरात में भाजपा एक हाशिए की पार्टी थी। 1987 में, भाजपा ने पहली बार अहमदाबाद नगर निगम पर नियंत्रण हासिल किया—ठीक उसी तरह जैसे पार्टी ने हाल ही में तिरुवनंतपुरम में जीत हासिल की है। तब से, गुजरात की जनता ने हमें सेवा करने के अवसर दिए हैं, और हम दशकों से ऐसा करते आ रहे हैं। हमारी यात्रा गुजरात के एक शहर से शुरू हुई, और इसी तरह, केरल में भी हमारी शुरुआत एक शहर से हुई है। प्रधानमंत्री ने इस बात पर जोर दिया कि तिरुवनंतपुरम अब शेष देश के लिए एक आदर्श शहर के रूप में काम करेगा। उन्होंने आगे कहा कि इस शहर के लोगों से मैं कहता हूँ, विश्वास रखें। तिरुवनंतपुरम पूरे देश के लिए एक आदर्श शहर बनेगा। मैं तिरुवनंतपुरम को भारत के सर्वश्रेष्ठ शहरों में से एक बनाने के लिए अपना पूरा समर्थन देता हूँ। प्रधानमंत्री ने आगामी चुनावों से पहले केरल के व्यापक राजनीतिक परिदृश्य पर भी चर्चा की। उन्होंने कहा कि केरल के भविष्य पर विचार करते समय, राजनीतिक परिदृश्य दो प्रमुख पक्षों में विभाजित है- एलडीएफ और यूडीएफ। वर्षों से, दोनों समूहों ने बारी-बारी से राज्य में शासन किया है, जिससे केरल की वर्तमान चुनौतियों में योगदान हुआ है। हालांकि, एक तीसरा विकल्प भी है - जो विकास और सुशासन को प्राथमिकता देता है - जिसका प्रतिनिधित्व भाजपा और एनडीए करते हैं।

नरेंद्र मोदी की हुंकार, डीएमके सरकार के पतन की उलटी गिनती शुरू

मदुरंथकम २३/०१ (संवाददाता): प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मंगलवार को मदुरंथकम में एक जनसभा को संबोधित करते हुए तमिलनाडु में एनडीए के चुनावी अभियान की शुरुआत की। पीएम मोदी ने अपने संबोधन की शुरुआत स्वतंत्रता सेनानी सुभाष चंद्र बोस की जयंती पर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए की और याद दिलाया कि तमिलनाडु के कई लोगों ने भारत के स्वतंत्रता संग्राम में उनके साथ लड़ाई लड़ी थी। पीएम मोदी ने कहा कि रैली में भारी भीड़ ने पूरे देश को एक सशक्त संदेश दिया है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि तमिलनाडु बदलाव के लिए तैयार है और डीएमके के कुशासन से खुद को मुक्त करना चाहता है। उन्होंने दावा किया कि एनडीए के सभी सहयोगी राज्य को भ्रष्टाचार से मुक्त करने के दृढ़ संकल्प के साथ एकजुट हुए हैं।

प्रधानमंत्री ने आगे कहा कि डीएमके के पतन की उलटी गिनती शुरू हो चुकी है और उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि एनडीए तमिलनाडु में विकास का एक नया अध्याय लेकर आएगा। उन्होंने कहा कि तमिलनाडु अब डीएमके के कुशासन से मुक्ति चाहता है। तमिलनाडु अब भाजपा-एनडीए सरकार चाहता है... हमें तमिलनाडु को डीएमके सरकार से मुक्त करना होगा। हमें तमिलनाडु को एक विकसित, सुरक्षित और भ्रष्टाचार मुक्त राज्य बनाना होगा। मैं स्पष्ट रूप से देख सकता हूं कि डीएमके सरकार के पतन की उलटी गिनती शुरू हो चुकी है।

प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि स्टालिन के नेतृत्व वाली पार्टी दो बार बहुमत वाली सरकार बनाने के बावजूद अपने वादों को पूरा करने में विफल रही। उन्होंने डीएमके को सीएमसी सरकार करार दिया, जो भ्रष्टाचार, माफिया और अपराध को卐बढ़ावा卐 देती है। उन्होंने कहा कि आपने डीएमके को दो बार पूर्ण बहुमत दिया, लेकिन उन्होंने तमिलनाडु की जनता का विश्वास तोड़ा। डीएमके ने ढेरों वादे किए, लेकिन कोई काम नहीं किया। लोग अब डीएमके सरकार को सीएमसी सरकार कह रहे हैं। सीएमसी सरकार का मतलब है %भ्रष्टाचार, माफिया और अपराध% को बढ़ावा देने वाली सरकार। तमिलनाडु की जनता ने अब डीएमके और सीएमसी दोनों को उखाड़ फेंकने का मन बना लिया है। यहां भाजपा-एनडीए की दोहरी इंजन सरकार का सत्ता में आना तय है।

मोदी ने कहा कि बीते 11 वर्षों में एनडीए की केंद्र सरकार ने तमिलनाडु के विकास के लिए अभूतपूर्व कार्य किया है। 2014 से पहले जब दिल्ली में डीएमके और कांग्रेस की गठबंधन वाली सरकार थी, उस दौरान तमिलनाडु के विकास के लिए बहुत कम फंड दिया जाता था।

बीते 11 वर्षों में केंद्र की एनडीए सरकार ने सिर्फ स्रद्ग1द्गद्यशश्चद्वद्गठ्ठह्ल के माध्यम से करीब-करीब 3 लाख करोड़ रुपए तमिलनाडु को दिए हैं। उन्होंने कहा कि बीते 11 वर्षों में तमिलनाडु के लोगों के वेलफेयर के लिए केंद्र से करोड़ों रुपए की मदद मिली है। वरना, कांग्रेस-डीएमके गठबंधन के राज में तो गरीब, एससी-एसटी, ओबीसी के वेलफेयर के नाम पर सिर्फ घोटाले ही होते थे। डीएमके-कांग्रेस जितना रेल बजट तमिलनाडु को देती थी, एनडीए सरकार उससे सात गुना अधिक बजट तमिलनाडु को दे रही है।

प्रधानमंत्री ने कहा कि पहले किसानों के बैंक अकाउंट बहुत कम होते थे। एनडीए सरकार ने बैंक अकाउंट भी खोले और पीएम किसान सज्मान निधि जैसी स्कीम भी शुरू की। इसके तहत अब तक देश के किसानों को करीब 4 लाख करोड़ रुपए मिल चुके हैं। तमिलनाडु के लाखों किसानों के अकाउंट में भी 12 हजार 7 सौ करोड़ रुपए भेजे गए हैं। उन्होंने कहा कि डीएमके सरकार के दौरान, नशीले पदार्थों और शराब के माफियाओं का बोलबाला रहा। इसके विपरीत, एनडीए तमिलनाडु में स्वास्थ्य सेवा प्रणाली में सुधार के लिए प्रतिबद्ध है। एनडीए, दवाइयों और चिकित्सा उपकरणों के निर्माण को बढ़ावा देकर राज्य में स्वास्थ्य सेवा में बदलाव लाएगी, जिससे युवाओं के लिए रोजगार के नए अवसर पैदा होंगे।

नेहरू की विरासत को नष्ट करने की साजिश-सोनिया गांधी

नयी दिल्ली २३/०१ (संवाददाता): कांग्रेस संसदीय दल (सीपीपी) की अध्यक्ष सोनिया गांधी ने पूर्व प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू की विरासत को विकृत और अपमानित करने के प्रयासों की कड़ी आलोचना की और इसे इतिहास को फिर से लिखने और राष्ट्र की नींव को नष्ट करने का एक सुनियोजित प्रयास बताया। सत्तारूढ़ भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) पर जवाहरलाल नेहरू की विरासत को बदनाम करने का आरोप लगाते हुए, सोनिया गांधी ने दावा किया कि उनका लक्ष्य देश की सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक नींव को नष्ट करना है।

राष्ट्रीय राजधानी स्थित जवाहर भवन में नेहरू सेंटर इंडिया के शुभारंभ के अवसर पर उन्होंने कहा कि इसमें कोई संदेह नहीं होना चाहिए कि जवाहरलाल नेहरू को बदनाम करने की परियोजना आज सत्ताधारी प्रतिष्ठान का मुज्य उद्देश्य है। उनका लक्ष्य केवल उन्हें मिटाना नहीं है, बल्कि वास्तव में उन सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक नींव को नष्ट करना है जिन पर हमारे राष्ट्र की स्थापना और निर्माण हुआ है। कांग्रेस संसदीय दल की अध्यक्ष ने कहा कि हम उनके (पूर्व प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू) योगदानों के निरंतर विश्लेषण का स्वागत करते हैं, लेकिन उन्हें बदनाम करने, विकृत करने, अपमानित करने और अपमानित करने का व्यवस्थित प्रयास अस्वीकार्य है।

संभल की जामा मस्जिद की नहीं होगी रंगाई-पुताई, सिर्फ साफ सफाई की इजाजत

संभल २३/०१ (संवाददाता): इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने शुक्रवार को भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण ;एएसआईद्ध को संभल में जामा मस्जिद के परिसर को साफ करने का निर्देश दियाए लेकिन मस्जिद की सफेदी करने का आदेश पारित नहीं किया। न्यायमूर्ति रोहित रंजन अग्रवाल ने यह आदेश जामा मस्जिद प्रबंधन समिति के एक आवेदन पर पारित कियाए जिसमें रमजान से पहले मस्जिद की सफेदी और सफाई की अनुमति मांगी गई थी।

गुरुवार को अदालत ने एएसआई को मस्जिद स्थल का तुरंत निरीक्षण करने और तीन अधिकारियों की एक टीम नियुक्त करने का निर्देश दियाए जो शुक्रवार सुबह 10 बजे तक इस संबंध में एक रिपोर्ट पेश की।

एएसआई की रिपोर्ट के मुताबिकए मस्जिद के अंदरूनी हिस्से में सिरेमिक पेंट है और फिलहाल इसे सफेद करने की कोई जरूरत नहीं है। शुक्रवार को सुनवाई के दौरान मस्जिद समिति की ओर से पेश वरिष्ठ वकील एस एफ ए नकवी ने कहा कि वे चाहते हैं कि केवल सफेदी और रोशनी का काम किया जाए। इस पर कोर्ट ने एएसआई को परिसर में धूल साफ करने और घास साफ करने को कहा। नकवी ने अदालत को आश्वासन दिया कि सफाई के दौरान कोई बाधा उत्पन्न नहीं की जाएगी जबकि राज्य के महाधिवक्ता ने कहा कि कानून व्यवस्था बनाए रखी जाएगी।

संभल पुलिस ने इस दावे का विरोध करते हुए तर्क दिया कि समिति को किसी भी रखरखाव कार्य के लिए भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण से अनुमति की आवश्यकता है।

सुप्रीम कोर्ट के आदेश के बाद धार की भोजशाला छावनी में तब्दील

धार २३/०१ (संवाददाता): मध्य प्रदेश के धार जिले में स्थित 11वीं सदी के विवादित भोजशाला-कमल मौला मस्जिद परिसर में आज सुरक्षा के कड़े इंतजाम किए गए हैं। इस साल बसंत पंचमी का पर्व शुक्रवार को होने के कारण, सांप्रदायिक तनाव की स्थिति को टालने के लिए सुप्रीम कोर्ट ने हस्तक्षेप किया है। शीर्ष अदालत द्वारा तय किए गए %टाइम शेयरिंग फॉर्मूले% के तहत आज यहाँ हिंदू और मुस्लिम दोनों समुदाय के लोग अपनी-अपनी प्रार्थनाएं संपन्न करेंगे। शुक्रवार की नमाज़ और बसंत पंचमी की पूजा के लिए भोजशाला में भारी सुरक्षा और पैरामिलिट्री कर्मियों को तैनात किया गया है।

इस साल बसंत पंचमी का त्योहार शुक्रवार को पड़ने के कारण, दोनों समुदायों ने इस जगह पर पूजा करने का दावा किया था। लेकिन गुरुवार को, सुप्रीम कोर्ट ने किसी भी तरह के सांप्रदायिक टकराव से बचने के लिए एक खास समय-बांटने का फॉर्मूला दिया। पूजा और नमाज़ साथ-साथ होंगी और इसी वजह से, भोजशाला एक सुरक्षित किले में बदल गया है ज्योंकि मेटल डिटेज्टर स्कैनर से सुरक्षा जांच की जा रही है।

ज़िला पुलिस, रैपिड एज्शन फोर्स, ष्टक्रक्कस्न, स्क्र आर्म्ड फोर्स, स्ञ्जस्न और महिला पुलिस यूनिट सहित 8,000 से ज्यादा सुरक्षाकर्मियों को साइट के चारों ओर तैनात किया गया है, और प्रशासन यह सुनिश्चित करने के लिए ड्रोन और ष्टष्टञ्जङ्क कैमरों पर भी भरोसा कर रहा है कि कोई अप्रिय घटना न हो।

चीफ जस्टिस सूर्यकांत की बेंच ने फैसला सुनाया कि 23 जनवरी को धार्मिक गतिविधियां बांटी जाएंगी, और हिंदू समुदाय को सूर्योदय से सूर्यास्त तक पूजा करने की इजाज़त होगी, जबकि मुस्लिम समुदाय को दोपहर 1:00 बजे से 3:00 बजे के बीच नमाज़ पढ़ने की इजाज़त होगी।

सुप्रीम कोर्ट ने मुस्लिम

समुदाय को नमाज़ में शामिल होने वाले लोगों की लिस्ट पहले से ज़िला प्रशासन को देने का भी निर्देश दिया। चीफ जस्टिस ऑफ इंडिया सूर्यकांत और जस्टिस जॉयमाल्य बागची और विपुल एम पंचोली की बेंच ने दोनों पक्षों से आपसी सज्मान बनाए रखने और कानून व्यवस्था बनाए रखने के लिए राज्य और ज़िला प्रशासन के साथ सहयोग करने की अपील की।

भोजशाला परिसर की ओर जाने वाली सड़कों पर बैरिकेड्स लगाए गए थे और सुरक्षाकर्मी गाड़ियों की जांच कर रहे थे। अधिकारियों ने बताया कि धार में 200 से ज्यादा ष्टष्टञ्जङ्क कैमरे लगाए गए हैं और हवाई निगरानी के लिए लगभग 10 ड्रोन का इस्तेमाल किया जा रहा है। भोजशाला से संबंधित सोशल मीडिया गतिविधि पर भी कड़ी नज़र रखी जा रही है, और निगरानी टीमें चौबीसों घंटे काम कर रही हैं।

भोजशाला परिसर के अंदर बसंत पंचमी की तैयारियां साफ दिख रही थीं। पूजा स्थल को केसरिया झंडों, फूलों और रंगोली से सजाया गया है। देवी सरस्वती, जिन्हें मां वाग्देवी भी कहा जाता है, की पूजा सूर्योदय के समय पूजा और हवन के साथ शुरू होगी और पूरे दिन चलेगी। अधिकारियों ने बताया कि इस मौके पर गर्भगृह में देवी की एक तेल पेंटिंग लगाई जाएगी।

धार कलेज्टर प्रियंक मिश्रा ने कहा कि दोनों समुदायों के लिए अलग-अलग जगहें तय की गई हैं। मिश्रा ने कहा, हिंदू पक्ष को उस जगह पर पूजा करने की इजाजत होगी जहां पारंपरिक रूप से पूजा की जाती रही है, जबकि मुस्लिम पक्ष को नमाज पढ़ने के लिए एक खास जगह दी जाएगी। यह सब दोनों समूहों को बता दिया गया है और वे इसका पालन करने के लिए सहमत हो गए हैं।

अलग-अलग एंट्री और एग्जिट रास्ते दिए जाएंगे, और सिर्फ उन्हीं लोगों को नमाज पढ़ने की इजाजत होगी जिनके नाम मुस्लिम पक्ष द्वारा दिए जाएंगे।

पुलिस अधीक्षक मनीष अवस्थी ने कहा कि सुरक्षाकर्मी कानून-व्यवस्था बनाए रखने के लिए पूरी तरह तैयार हैं। अवस्थी ने कहा, लगभग 8,000 कर्मियों की फोर्स तैनात की गई है। लगातार निगरानी के लिए सीसीटीवी कैमरे और ड्रोन का इस्तेमाल किया जाएगा।

कलिंग समाचार
THE KALINGA SAMACHAR
(A Hindi Daily News Paper)
PUBLISHED FROM ODISHA, JHARKHAND & CHATTISHGARH
FOR NEWS AND ADVERTISEMENT CONTACT
AT: QRS. NO. B/204, SECTOR-16
ROURKELA, PH. 0661-2646999
PRAKASH KUMAR DHAL (EDITOR)
E-mail: thekalingasamachar@gmail.com

विविध समाचार

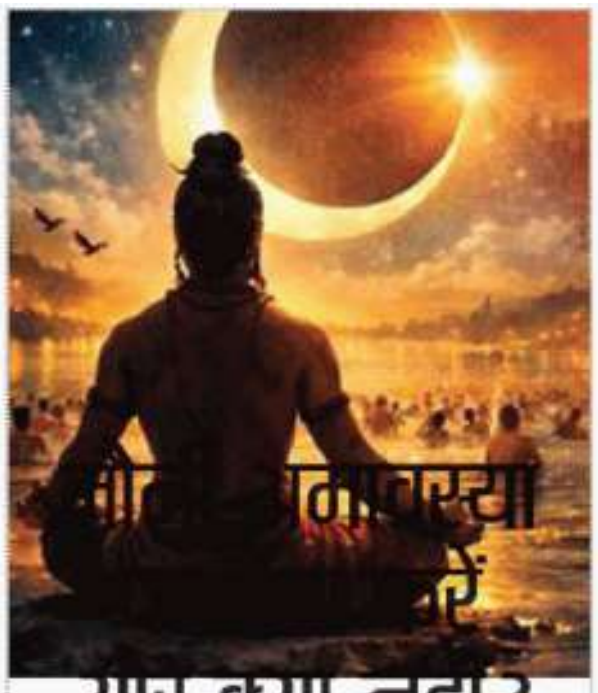

और क्या नहा?

मौनी अमावस्या का ज्योतिष शास्त्र में बहुत महत्व है। इस दिन किसी पवित्र नदी में स्नान के बाद दान करना शुभ माना जाता है। मौनी अमावस्या पर पवित्र नदियों में स्नान के बाद दान करने पुण्य फलों की प्राप्ति होती है।

माघ माह के कृष्ण पक्ष की अमावस्या को माघी अमावस्या या मौनी अमावस्या कहा जाता है। इस साल मौनी अमावस्या 18 जनवरी को है। मौनी अमावस्या का ज्योतिष शास्त्र में बहुत महत्व है। इस दिन किसी पवित्र नदी में स्नान के बाद दान करना शुभ माना जाता है। मौनी अमावस्या पर पवित्र नदियों में स्नान के बाद दान करने पुण्य फलों की प्राप्ति होती है। इस दिन मौन व्रत रखने का विधान है। हालांकि गृहस्थ लोगों के लिए दिन भर मौन रह पाना थोड़ा मुश्किल है। ऐसे में गृहस्थ लोग पूजा-पाठ करने के बाद अपना मौन व्रत खोल सकते हैं। इसके अलावा शास्त्रों में मौनी अमावस्या के दिए कुछ ऐसे कार्य बताए गए हैं, जिन्हें करने से आपको बचना चाहिए।

मौनी अमावस्या यानी कि मौन रहकर ईश्वर की साधना करने का अवसर। मौनी अमावस्या का धर्म शास्त्रों में बहुत ही खास महत्व माना गया है। इस दिन व्रत रखकर भगवान की पूजापाठ में मन लगाना चाहिए। संभव हो सके तो इस दिन गंगा में स्नान जरूर करना चाहिए। ऐसा करने से आपके सभी पाप दूर होते हैं और आपको विशेष पुण्य की प्राप्ति होती है।

मौनी अमावस्या माघ मास की अमावस्या को कहते हैं। इस दिन गंगा स्नान करने और दान पुण्य करने का विशेष महत्व होता है। मौनी अमावस्या को लेकर ऐसा कहा जाता है कि इस दिन गंगा में आस्था की डुबकी लगाने से जन्मों के पाप धुल जाते हैं। मौनी अमावस्या के दिन मौन रहकर ईश्वर की भक्ति में मन लगाते हैं। इसलिए इसे मौनी अमावस्या कहते हैं। मान्यता है कि इस दिन जप और तप करने वाले व्यक्ति को शनि के अशुभ प्रभाव से मुक्ति मिलती है और मन को शांति मिलती है।

मौनी अमावस्या 2026 कब है?

वर्ष 2026 में मौनी अमावस्या 18 जनवरी को मनाई जाएगी। अमावस्या तिथि का शुभारंभ 18 जनवरी की रात 12 बजकर 03 मिनट से होगा और इसका समापन 19 जनवरी की रात 1 बजकर 21 मिनट पर होगा। उदयातिथि की मान्यता के अनुसार, यह पर्व 18 जनवरी को मनाया जाएगा।

मौनी अमावस्या का महत्व

गंगा में स्नान करने का खास महत्व शास्त्रों में बताया गया है। इस दिन प्रयागराज में माघ मेले की सबसे बड़ा स्नान होता है। इस दिन मौन रहकर साधना करना सर्वश्रेष्ठ माना गया है। इस दिन साधु संत लोग मौन व्रत करते हैं। इस दिन गंगा में स्नान करने से आपके सभी पाप धुल जाते हैं और आपको कई गुना पुण्य मिलता है। इस दिन मंदिरों और धार्मिक स्थलों में हवन पूजन के कार्यक्रम किए जाते हैं।

प्रयागराज को लेकर यह है खास मान्यता

मौनी अमावस्या के विषय में प्रयाग में संगम नदी के स्नान को लेकर ऐसी मान्यता है कि इस दिन देवता और पितर अदृश्य रूप से आकर नदी में स्नान करते हैं और उनके स्नान से जल पवित्र हो जाता है। ऐसी नदी में स्नान करने से आपको पुण्य की प्राप्ति होती है और पापों का अंत होता है। इस दिन गंगा में स्नान करने से आपके कई त्वचा संबंधी रोग दूर हो जाते हैं।

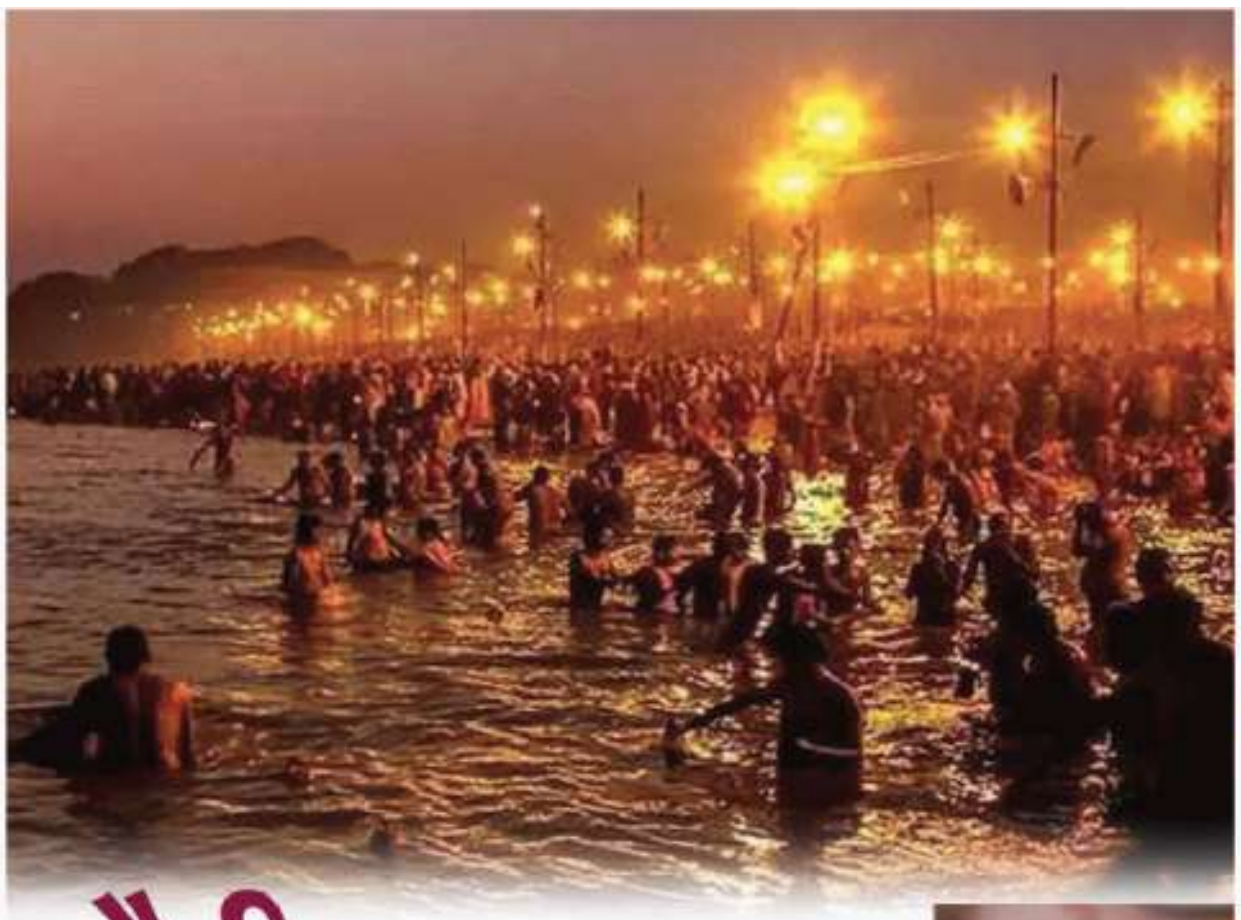

मौनी अमावस्या

स्नान-दान से मोक्ष की ओर अग्रसर होने का पर्व

सनातन धर्म में प्रत्येक तिथि का अपना आध्यात्मिक महत्व है, परंतु अमावस्या को विशेष रूप से स्नान, दान, तर्पण और पितृ शांति के लिए अत्यंत फलदायी माना गया है। इन्हीं अमावस्या तिथियों में मौनी अमावस्या को अन्य अमावस्या तिथियों की तरह ही पुण्यदायी अमावस्या कहा गया है।

माघ मास के कृष्ण पक्ष की अमावस्या को मनाई जाने वाली यह तिथि आत्मशुद्धि, मौन साधना और पितरों के कल्याण का अनुपम अवसर प्रदान करती है। मौनी अमावस्या को माघी अमावस्या भी कहा जाता है। इस दिन मौन रहकर किए गए जप-तप और सेवा कार्य साधक को विशेष पुण्य प्रदान करते हैं। शास्त्रों में वर्णन मिलता है कि इस दिन किया गया स्नान और दान मनुष्य को सांसारिक बंधनों से मुक्त कर मोक्ष के मार्ग की ओर अग्रसर करता है। मौनी अमावस्या के दिन गंगा, यमुना, नर्मदा, सरयू अथवा किसी भी पवित्र नदी में स्नान करना अत्यंत पुण्यकारी माना गया है। प्रातः ब्रह्म मुहूर्त में स्नान कर सूर्यदेव को अर्घ्य देने की परंपरा है। स्नान के समय पितरों का स्मरण करते हुए उन्हें जल अर्पित करें। ऐसा करने से पितर प्रसन्न होते हैं, परिवार को आशीर्वाद देते हैं और जीवन में सुख-समृद्धि का संचार होता है। मान्यता है कि इस दिन तर्पण, पिंडदान और श्राद्ध करने से पितरों को मोक्ष की प्राप्ति होती है।

गंगा स्नान संभव न हो तो क्या करें?

मौनी अमावस्या पर पवित्र नदियों में स्नान करके करोड़ों श्रद्धालु पुण्य लाभ प्राप्त करते हैं। किंतु यदि किसी कारणवश आप गंगा या किसी पवित्र नदी में स्नान करने में असमर्थ हैं, तो निराश होने की आवश्यकता नहीं है। घर पर स्नान के जल में कुछ बूंदे गंगाजल मिलाकर ब्रह्म मुहूर्त में स्नान करें। इसे भी गंगा स्नान के समान पुण्यकारी माना गया है। इसके अतिरिक्त, संध्या समय घर की दक्षिण दिशा में चौमुखी दीपक जलाएं। यह उपाय पितरों की कृपा प्राप्त करने और घर में शांति एवं खुशहाली लाने में सहायक माना जाता है।

मौनी अमावस्या पर दान

स्नान के पश्चात मौनी अमावस्या पर दान करना बेहद पुण्यदायी माना गया है। शास्त्रों के अनुसार, इस दिन किया गया दान सौ यज्ञों के बराबर पुण्य फल देता है। दान का उल्लेख करते हुए गोस्वामी तुलसीदास जी ने रामचरितमानस में लिखा है-

प्रगट चारि पद धर्म के कलि महुँ एक प्रधान।
जेन केन बिधि दीन्हें दान करइ कल्यान॥

अर्थात् धर्म के चार चरण सत्य, दया, तप और दान हैं जिनमें कलियुग में एक दान रूपी चरण ही प्रधान है। दान जैसे भी दिया जाये वह कल्याण ही करता है।

मौनी अमावस्या के दिन अन्न, वस्त्र, कंबल तथा जरूरतमंदों की आवश्यक वस्तुओं का दान करना चाहिए। साथ ही गौसेवा, पशु-पक्षियों को चारा और दाना डालना भी विशेष पुण्य प्रदान करता है। ऐसा करने से पितरों की आत्मा तृप्त होती है और पितृदोष से मुक्ति मिलती है।

मौनी अमाव इन चीजों का

- मौनी अमावस्या पर अन्न के दान माना गया है। इस दिन दान देव सेवा संस्थान में दीन-दुखी, नि भोजन कराने के प्रकल्प में सह पुण्य के भागी बनें।
- मौनी अमावस्या आत्मचिंतन औ है। मौन, स्नान, दान और पितृ र माध्यम से यह दिन जातकों को करने और आध्यात्मिक उन्नति र आगे बढ़ने का अवसर देता है।
- मौनी अमावस्या पर श्रद्धा, नियम साथ किए गए पुण्य कर्म न केव मोक्ष प्रदान करते हैं, बल्कि साथ में भी शांति, समृद्धि और आध्या का संचार करते हैं।

गलती से भी घर में न लगाएं मां लक्ष्मी की ऐसी तस्वीर, आ सकती है आर्थिक तंगी

सनातन धर्म में मां लक्ष्मी को धन की देवी माना जाता है। धार्मिक मान्यताओं के मुताबिक मां लक्ष्मी जिस भी व्यक्ति पर प्रसन्न हो जाती हैं उसपर अपनी अकूत कृपा बरसाती हैं। कहा जाता है कि जो व्यक्ति मां लक्ष्मी की विधि विधान से पूजा करता है उसे कभी धन-दौलत की कमी नहीं होती है। इसलिए लोग मां लक्ष्मी को प्रसन्न करने के लिए विभिन्न प्रकार से उनकी पूजा अर्चना करते हैं। अक्सर लोग अपने घरों में मां लक्ष्मी की मूर्ति या तस्वीर लगाते हैं। घर में मां लक्ष्मी की तस्वीर या मूर्ति लगाना शुभ माना जाता है। मगर कई बार लोग अनजाने में मां लक्ष्मी की कुछ ऐसी तस्वीर लगा लेते हैं जो भूलकर भी घर में नहीं लगानी चाहिए। असल में उन तस्वीरों को लगाने से घर में कंगाली आ सकती है। ऐसे में माता लक्ष्मी की तस्वीर लगाते समय कुछ बातों का ध्यान रखना बहुत जरूरी होता है। इसलिए आइए इस लेख में विस्तार से जानते हैं कि मां लक्ष्मी की किन तस्वीरों को लगाने से बचना चाहिए।

न लगाएं उल्लू के साथ मां लक्ष्मी की तस्वीर

मां लक्ष्मी को धन की देवी माना जाता है। हालांकि, उल्लू को उनका वाहन माना जाता है, फिर भी मां लक्ष्मी की उल्लू पर सवार तस्वीर घर में नहीं लगानी चाहिए। ऐसी मान्यता है कि जब मां लक्ष्मी के पास उल्लू की मूर्ति होती है तो वो उल्लू पर सवार होकर चली जाती हैं। इसलिए, ऐसी तस्वीर घर में रखने से मां लक्ष्मी की कृपा से वंचित होने का खतरा रहता है।

न लगाएं ऐसी तस्वीर

शास्त्रों के अनुसार, मां लक्ष्मी की खड़ी हुई मुद्रा वाली तस्वीर घर में रखना शुभ नहीं माना जाता। ऐसा माना जाता है कि खड़ी हुई मुद्रा में मां लक्ष्मी का चित्रण उनकी चंचलता को दर्शाता है। जब मां लक्ष्मी खड़ी होती हैं, तो यह इस बात का संकेत होता है कि वे एक जगह स्थिर नहीं रहेंगी और जल्द ही घर से चली जाएंगी। इसलिए, मां लक्ष्मी की ऐसी तस्वीर घर में रखने से धन और समृद्धि में कमी आ सकती है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, मां लक्ष्मी की बैठी हुई मुद्रा वाली तस्वीर को ही घर में स्थापित करना शुभ माना जाता है।

ऐसी तस्वीर होती है शुभ

मां लक्ष्मी की कमल के फूल पर विराजमान और सोने के सिक्के बरसाते हुए तस्वीर को शुभ माना जाता है। यह चित्रण देवी लक्ष्मी की धन और समृद्धि प्रदान करने वाली शक्ति का प्रतीक है। ऐसी तस्वीर घर में रखने से धन-धान्य की वृद्धि होती है।

आशीर्वाद की मुद्रा

घर में मां लक्ष्मी की ऐसी तस्वीर लगाना शुभ होता है, जिसमें वे आशीर्वाद मुद्रा में बैठी हों। ऐसी तस्वीर से घर में सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है और माता लक्ष्मी हमेशा कृपा बरसाती हैं। यह तस्वीर धन और समृद्धि का प्रतीक मानी जाती है।

पर्स में नहीं टिक रहा पैसा, आमदनी से ज्यादा खर्च से हैं परेशान, अपनाएं ये आसान वास्तु टिप्स

अक्सर लोग इस बात को लेकर परेशान रहते हैं कि मेहनत करने के बाद भी उनके पास पैसा नहीं टिक पाता। अच्छी खासी कमाई होने के बाद भी खर्च इतने बढ़ जाते हैं कि बचत करना नामुमकिन हो जाता है। वास्तु शास्त्र के अनुसार, इसका कारण घर या ऑफिस में कुछ छोटे-छोटे वास्तु दोष होते हैं, जो धन के प्रवाह को रोकते हैं। समय रहते इन दोषों को दूर करने से आपकी आर्थिक स्थिति में सुधार आ सकता है और मां लक्ष्मी की कृपा प्राप्त हो सकती है। आइए जानते हैं वास्तु के कुछ आसान टिप्स जो इन दोषों को दूर कर आपकी आर्थिक स्थिति को मजबूत बनाते हैं।

कुबेर देवता का मनाने के उपाय

वास्तु शास्त्र के अनुसार, घर की उत्तर दिशा धन और समृद्धि से जुड़ी होती है, जिसके स्वामी धन के देवता कुबेर हैं। इस क्षेत्र को साफ-सुथरा रखने से आर्थिक स्थिति मजबूत होती है। उत्तर दिशा में पानी का फव्वारा लगाना बहुत ही शुभ माना जाता है। पानी के फव्वारे से बहता पानी धन के प्रवाह से जुड़ा होता है।

रसोई घर के लिए शुभ दिशा

रसोई घर को सबसे महत्वपूर्ण स्थानों में से एक माना जाता है। यह घर के स्वास्थ्य और समृद्धि में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। वास्तु के अनुसार, रसोई घर के दक्षिण-पूर्व दिशा में होना चाहिए। ध्यान रखें कि घर की उत्तर दिशा में रसोई घर न बनाएं। इससे आपकी आर्थिक स्थिति पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है।

मौनी अमावस्या पर ये चार राशि वाले रहें सावधान अधिक रहेगा नकारात्मक शक्तियों का खतरा

हिंदू पंचांग के अनुसार हर महीने कृष्ण पक्ष की अंतिम तिथि को अमावस्या पड़ती है। माना जाता है कि अमावस्या के दिन नकारात्मक ऊर्जा अधिक सक्रिय रहती है। इस दिन कुछ लोग तंत्र-मंत्र की साधना करते हैं। इस दिन धन, वैभव और सुख-समृद्धि की प्राप्ति के लिए माता लक्ष्मी की उपासना भी की जाती है।

फिलहाल माघ माह चल रहा है और इस वर्ष माघ अमावस्या 18 जनवरी, रविवार को पड़ रही है। माघ अमावस्या को मौनी अमावस्या भी कहा जाता है। इस दिन स्नान, दान और पुण्य कर्म का विशेष महत्व बताया गया है। ज्योतिषीय दृष्टि से माघ अमावस्या कुछ राशियों के लिए चुनौतीपूर्ण रह सकती है। खासतौर पर चार राशियों के जातकों को इस दिन अधिक सतर्कता बरतने की आवश्यकता है। आइए जानते हैं कि माघ अमावस्या पर किन राशियों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है।

वृषभ राशि

माघ अमावस्या पर इनको पैतृक संपत्ति या जमीन-जायदाद से जुड़े मामलों में सावधानी बरतनी होगी। प्रॉपर्टी विवाद के कारण मानसिक तनाव बढ़ सकता है, जिसका असर आपकी सेहत पर भी पड़ सकता है। नौकरीपेशा लोगों को कार्यस्थल पर किसी से बहस या मतभेद होने की आशंका है। अपने काम को गोपनीय रखें और वरिष्ठ अधिकारियों से सीधे संवाद बनाए रखें, क्योंकि कुछ लोग आपके खिलाफ षड्यंत्र कर सकते हैं। इस दिन किसी भी तरह के विवाद से दूरी बनाए रखना ही बेहतर रहेगा।

सिंह राशि

सिंह राशि के जातकों के लिए माघ अमावस्या पर प्रॉपर्टी से जुड़े मामले परेशानी का कारण बन सकते हैं। किसी भी दस्तावेज पर हस्ताक्षर करने से पहले उसे अच्छी तरह पढ़ें और जरूरत पड़े तो कानूनी सलाह जरूर लें। कोई व्यक्ति आपको धोखा देने की कोशिश कर सकता है। अपने भविष्य के प्लान दूसरों के साथ साझा करने से बचें। दूसरों के झगड़ों में पड़ना नुकसानदेह हो सकता है। इस दिन निर्णय लेने में असमंजस की स्थिति भी बनी रह सकती है।

तुला राशि

तुला राशि के लोगों को माघ अमावस्या के दिन मान-सम्मान से जुड़ी सावधानी रखनी होगी। किसी और की गलती का आरोप आप पर आ सकता है। नौकरी करने वालों को सलाह दी जाती है कि सहकर्मियों पर आंख मूंदकर भरोसा न करें, क्योंकि चुगली या गलतफहमी के कारण आपकी छवि प्रभावित हो सकती है। कार्यक्षेत्र में मेहनत के अनुसार परिणाम न मिलने से निराशा हो सकती है। अपनी कमजोरियों को दूसरों के सामने उजागर न करें और जरूरत पड़ने पर अपनी गलती स्वीकार करने से पीछे न हटें।

मीन राशि

मीन राशि के जातकों के लिए माघ अमावस्या प्रेम संबंध और वैवाहिक जीवन के लिहाज से थोड़ा संवेदनशील रह सकती है। इस दिन रिश्तों में गलतफहमी या तनाव उत्पन्न हो सकता है। ऐसे शब्दों या व्यवहार से बचें, जिससे पार्टनर की भावनाओं को ठेस पहुंचे। वाणी पर संयम रखना बेहद जरूरी है। केवल भाग्य के भरोसे न बैठें, बल्कि अपने कर्मों पर भी ध्यान दें। गलत कार्यों और असत्य से दूरी बनाए रखें, क्योंकि कोई व्यक्ति अपने स्वार्थ के लिए आपका उपयोग कर सकता है। सकारात्मक और रचनात्मक कार्य में व्यस्त रहें।

कलिंग समाचार

संपादकीय

शनिवार 24 जनवरी 2026

पत्रकार से अभद्रता और सही जवाब

नए साल के आने के दर यान मध्यप्रदेश से एक अच्छी और एक बुरी खबर आई। बुरी खबर यह कि देश के स्वच्छतम शहरों में शुमार राज्य की आर्थिक राजधानी इंदौर के भागीरथपुरा क्षेत्र में दूषित पानी की वजह से फैले संक्रमण ने गंभीर रूप ले लिया है। पिछले लगभग एक ह ते से दूषित पानी से बीमार होने की खबर आ रही थी। फिर पता चला कि मु य जल आपूर्ति लाइन में लीकेज के कारण सीवरेज का पानी मिलने से सैकड़ों लोग उल्टी-दस्त के शिकार हो गए हैं। कम से कम 13 लोगों की तो जान ही जा चुकी है और कई अब भी अस्पताल में भर्ती हैं। गौरतलब है कि मध्यप्रदेश में लगातार भाजपा का शासन बना हुआ है। 2018 में कांग्रेस ने चुनाव जीता भी था, लेकिन कमलनाथ सरकार को ज्योतिरादित्य सिंधिया की मदद से भाजपा ने गिरवा दिया और फिर से अपनी सरकार बना ली। इंदौर के सभी 9 विधायक भाजपा से हैं, सांसद भी भाजपा के हैं, महापौर भी भाजपा के हैं और सबसे बढ़कर शहरी विकास मंत्री कैलाश विजयवर्गीय भी भाजपा से ही हैं। इसके बावजूद अगर इतने लोग दूषित जल से मर जाएं, तो फिर नैतिकता यही कहती है कि जि मेदार लोगों को फौरन इस्तीफे की पेशकश कर देनी चाहिए। लेकिन मोदीजी के नए भारत में इस्तीफे नहीं होते, ये बात तो खुद राजनाथ सिंह कह चुके हैं। इस नए भारत में जनप्रतिनिधि मीडिया को सवाल पूछने का हक भी नहीं देते हैं, यह बात भी अब मोदी सरकार को और भाजपा को आधिकारिक तौर पर कह देनी चाहिए। क्योंकि लगातार ऐसे प्रकरण हो रहे हैं जिसमें सवाल पूछने वाले पत्रकार से बदसलूकी हो रही है। तो इस बुरी खबर के बीच अच्छी खबर ये है कि भाजपा भले ही सवाल पूछने का हक न दे, लेकिन देश में अभी कुछ पत्रकार बचे हैं जो न केवल सवाल पूछ रहे हैं, बल्कि मंत्री की तरफ से गलत भाषा के इस्तेमाल पर खुल कर विरोध भी कर रहे हैं। दरअसल कैलाश विजयवर्गीय से एनडीटीवी के पत्रकार अनुराग द्वारी ने दूषित जल प्रकरण पर सवाल किए तो उन्होंने झल्लाते हुए कहा कि फोकट के प्रश्न मत पूछो, श्री द्वारी इस पर भी नहीं रुके और उन्होंने प्रतिवाद किया, साथ ही कहा कि मैं वहां होकर आया हूं, तो उन्होंने कहा कि क्या घंटा होकर आए हो। इस नि नस्तरीय भाषा पर अनुराग द्वारी ने कैलाश विजयवर्गीय को सीधे-सीधे भाषा की तमीज का पाठ पढ़ा दिया और कहा कि वो अपना काम कर रहे हैं, हालांकि इसके बाद भी श्री विजयवर्गीय के साथ के लोगों ने अनुराग द्वारी को ही रोकने की कोशिश की कि हमारे नेता हैं, उनसे ऐसी बात नहीं की जा सकती। दरअसल मोदी-शाह के युग की भाजपा के कई नेताओं को यह खुशफहमी है कि उनसे सवाल नहीं किया जा सकता, या उनकी सरकार की खामियों पर टोका नहीं जा सकता। पूर्व सांसद स्मृति ईरानी ने अमेठी में एक पत्रकार को डपटते हुए कहा था कि मैं आपके मालिक से बात करूंगी। ये सीधे-सीधे पत्रकार को धमकी ही थी और इसमें जितनी गलती नेता की है, उतनी ही गलती उन मीडिया मालिकान की भी है, जो सत्ता से नजदीकी बढ़ाकर अपने लिए वित्तीय, सियासी या अन्य किस्मों के लाभ लेते हैं और बदले में आदर्शों को गिरवी रख देते हैं। मीडिया घरानों ने जिस तरह सत्ता के चरणों में खुद को झुका दिया है, उसी का नतीजा है कि अब पत्रकारों के सवालों का जवाब देना तो दूर उनसे शिष्टाचार से बातें भी नहीं की जातीं। अभी दो दिन पहले प.बंगाल में केन्द्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने एक पत्रकार से कहा कि तुम बंगाल की चिंता करो, हमारी पार्टी की चिंता मत करो। जबकि उन पत्रकार ने केवल यही पूछा था कि 75 साल में मार्गदर्शक मंडल में भेजने का नियम अभी के नेताओं पर भी लागू होगा। पत्रकार ने इशारों में नरेन्द्र मोदी के रिटायरमेंट की बात छेड़ी थी, जिस पर अमित शाह बिफर पड़े। वे चाहते तो सीधे-सीधे इसका जवाब दे सकते थे। लेकिन सत्ता की हनक ही इतनी है कि वे हर किसी को अपने से नि नतर समझने लगे हैं। पत्रकार उनकी पार्टी का कार्यकर्ता नहीं है कि उससे तुम कहकर बात की जाए, लेकिन अमित शाह और कैलाश विजयवर्गीय दोनों ने यही किया। ऐसा पहली बार नहीं हुआ है, बल्कि लगातार हो रहा है, जिससे देश में मीडिया की स्वतंत्रता और प्रतिष्ठा दोनों पर आंच आई है।

युवा शक्ति, शिक्षा प्रणाली और समस्याओं का अंबार

डॉ. प्रितम भि. गेडाम

दुनिया में मनुष्य के पास शिक्षा एक ऐसा बेशकीमती मौका है, जो जीवन में हर क्षेत्र, हर उच्च पद, काबिलियत और विकास का जरिया बनता है और हर वह मुकाम हासिल करने के लायक जो मनुष्य चाहता है, यह शिक्षा ही दिलाती हैं। इसके साथ ही मनुष्य के सर्वांगीण विकास की जि मेदारी भी शिक्षा पर होती है, मनुष्य के बेहतर जीवनयापन और जीवन में आनेवाली समस्याओं को हल करने की ताकत शिक्षा देती हैं। शिक्षा मनुष्य को संस्कारित करने के साथ-साथ उनके कलागुणों को निखारती है, आज प्रतियोगिताओं के युग में हमें अधिक कुशल बनाने में सहायक है और सतत प्रगतिपथ पर अग्रसर होने के लिए प्रेरित करके पथ प्रदर्शित करती हैं। मनुष्य ऐसी ही शिक्षा की कल्पना अपने जीवन के लिए करता है, जो उसके जीवन को सफल और सार्थक कर दें। शिक्षा पर हर एक मनुष्य का समान हक है और दुनिया में प्रत्येक को शिक्षा का यह अधिकार मिलना ही चाहिए ताकि वह अपना जीवन को बेहतर बना सकें, शिक्षा का भी यही उद्देश्य होता हैं। दुनिया में जिन देशों ने शिक्षा की गुणवत्ता और महत्व को समझा है, आज वह देश संपन्न राष्ट्रों में गिने जाते है, छोटे - छोटे देश भी शिक्षा की गुणवत्ता के बलबूते पर विकसित और प्रबल बन चुके हैं। यूनेस्को ने अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा दिवस 2026 की आधिकारिक थीम है 卐शिक्षा को मिलकर बनाने में युवाओं की शक्ति卐 घोषित की हैं।

देश में नई शिक्षा प्रणाली और कौशल विकास पर जोर दिया जा रहा है, ताकि युवाओं के सपनों को ऊंची उड़ान मिल सकें। यूचर ऑफ जॉब्स रिपोर्ट 2025 के अनुसार, वर्तमान कार्यबल के लगभग 39 प्रतिशत के कौशल साल 2030 तक अप्रचलित अर्थात पुराने हो जाने की प्रबल संभावना हैं। इंडिया स्किल्स रिपोर्ट 2025 के मुताबिक, सिर्फ़ 54.8 प्रतिशत भारतीय युवा ही नौकरी के काबिल माने जाते हैं, और कई लोगों में कार्यस्थल पर सफल होने के लिए आवश्यक डिजिटल दक्षता, अनुकूलनक्षमता और सॉ ट स्किल्स की कमी हैं।

नेशनल क्राइम रिकॉर्ड्स ब्यूरो डेटा के मुताबिक, 2022 में भारत में गिर तार हुए सभी नाबालिगों में से लगभग आधे 49.5 प्रतिशत हिंसक अपराधों में शामिल थे, यह 2016 के 32.5 प्रतिशत के मुकाबले बहुत ज़्यादा बढ़ोतरी है। राष्ट्रीय बाल अपराध दर 2022 में प्रति लाख बच्चों पर 6.9 से थोड़ा बढ़कर 2023 में 7.1 हो गया। दिल्ली में बच्चों में सबसे ज़्यादा अपराध दर, प्रति लाख बच्चों की आबादी पर 41.1 दर्ज किया गया, जो राष्ट्रीय औसत से बहुत ज़्यादा हैं। मानसिक तनाव की समस्या तेजी से बढ़ी है, देश के युवाओं में यह समस्या लगातार बढ़ रही है, बढ़ते तनाव, चिंता और अवसाद के साथ-साथ आसानी से मिलने वाले मानसिक सहयोग की कमी और लगातार सोशल स्टिग्मा की वजह से युवा मानसिक स्वास्थ्य समस्या का सामना कर रहे हैं। साल 2020-22 में, भारत में 15-29 साल के लोगों में आत्महत्या की वजह से 60,700 से ज़्यादा मौतें हुईं, जो दुनिया में सबसे ज़्यादा हैं। शिक्षित युवाओं में बेरोज़गारी बढ़ रही है क्योंकि पढ़ाई और नौकरी मार्केट की ज़रूरतों के बीच कौशल का मेल नहीं है, जबकि कई लोग कम फ़ायदों वाली, छोटे पद या जोखीमभरी नौकरियों में काम करने को मजबूर हैं। आज भी किसी सरकारी द तर में चपरासी के पद के लिए पदभर्ती के विज्ञापन आने पर हजारो उच्च शिक्षित युवा उस चपरासी के पद के लिए आवेदन करते हैं। दोस्तों के दबाव और तनाव या मौजमस्ती के कारण युवाओं के नशे की लत के जाल में फंसने की संभावना बहुत अधिक बढ़ रही है और उनके उपचार, पुनर्वसन, साधनसंपन्न सुविधा केंद्रों की कमी इस समस्या को अधिक खराब कर रही हैं।

कैग रिपोर्ट 2025 अनुसार, प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना में भारी गड़बड़िया मिली है, इस योजना के अंतर्गत 56.14 लाख युवाओं को ट्रेनिंग दी गई, उसमे से केवल 23.18 लाख युवाओं को रोजगार मिला, जबकि 32.96 लाख युवा अर्थात 58.71 प्रतिशत युवा कौशल विकास योजना का लाभ लेकर भी बेरोजगार ही रह गए हैं। इसमें 13.33 प्रतिशत युवा उ मीदवार कौशल के लिए आवश्यक न्यूनतम योग्यता भी पूरी नहीं कर पा रहे थे। 94.53 प्रतिशत मामलों में बैंक अकाउंट डिटेल्स खाली थी, 94 प्रतिशत से ज्यादा बैंक खातों की वैध जानकारी नहीं थी, इस कारण 34 लाख युवाओं को 500 रुपये का रिवॉर्ड भी नहीं मिला। इस योजना में एक ही स्थान के प्रशिक्षण के फोटो का इस्तेमाल अनेक राज्यों में हो रहा था, अनेक ट्रेनिंग सेंटर असल में बंद थे, लेकिन सेंटर कागजों पर चल रहे थे। अधिकतम युवा उ मीदवारों की ईमेल आईडी और मोबाइल नंबर भी फेक दिए गए थे। इस योजना के अंतर्गत 2015 से 2024 के बीच कुल 9261 करोड़ रुपया खर्च किया गया है, लक्ष्य 1.32 करोड़ युवाओं को कौशल विकास प्रशिक्षण देना था और 1.1 को प्रशिक्षण प्रमाणपत्र भी प्राप्त हुआ कागजों पर, लेकिन कैग ने इसे आंकड़ों का खेल बताया।

देश में लगातार बढ़ती आर्थिक विषमता समाज में एक बड़ी खाई का निर्माण कर रही है, इससे विकास कार्य में बाधाएं उत्पन्न होती हैं। विश्व आर्थिक मंच की वार्षिक सर्वेक्षण रिपोर्ट यूथ पल्स 2026 = बदलती दुनिया के लिए अगली पीढ़ी की सोच के निष्कर्ष अनुसार, 48.2 प्रतिशत ने बढ़ती आर्थिक विषमता को सबसे बड़ा संकट बताया हैं। इस सर्वेक्षण में 144 देश शामिल हुए। 57 प्रतिशत युवाओं ने वित्तीय चिंताओं को तनाव का प्रमुख कारण बताया हैं। 57.2 प्रतिशत युवाओं ने रोजगार निर्माण या उपलब्धता को प्राथमिकता दी है, जबकि 46.1 प्रतिशत युवाओं ने सस्ती और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की उपलब्धता को जरुरत माना हैं।

देश में बेरोजगारी का आलम तो हम सभी जानते ही है, लेकिन दशकों तक रिक्त पदों पर नई भर्ती न करना व्यवस्था या कार्यप्रणाली को कमजोर बना देती हैं। उदाहरण के लिए महाराष्ट्र राज्य के राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज नागपुर विश्वविद्यालय में स्वीकृत प्रोफेसर पद 258 है, इसमें से वर्तमान में कार्यरत केवल 86 है, बाकि 66 प्रतिशत पद खाली पड़े हुए है, जिसका सीधा असर शिक्षा की गुणवत्ता पर पड़ता हैं। यह सिर्फ एक विश्वविद्यालय की ही नहीं, अपितु संपूर्ण महाराष्ट्र राज्य में यही परिस्थिति है, देश के कुछ अन्य राज्यों के हालात भी कुछ अलग नहीं हैं। कई राज्यों में शिक्षा विभाग की स्थिति काफी भयावह हैं। कई राज्यों में शिक्षा विभाग के घोटाले अक्सर सुनाई देते है, भ्रष्टाचार, परीक्षा पर्चा लिक, जाली दस्तावेज, नकली भर्ती, परीक्षा में डमी परीक्षार्थी, नकली पदवी खरीद मामला जैसे अनेक मामले दिनोंदिन उजागर होते रहते हैं। इन सब के कारण शिक्षा जैसे पवित्र पेशे को कालिख पोत दी जाती है, और नुकसान देश के वर्तमान व आनेवाली पीढ़ी को भुगतना पड़ता हैं।

देश के निजी शिक्षा संस्थान और अनेक राज्यों के सरकारी विद्यालयों, संस्थानों के बिच बहुत बड़ा अंतर है, जो समय के साथ तेजी से बढ़ता ही जा रहा हैं। पिछले दशक (लगभग 2014-2024) में भारत में लगभग 90,000 सरकारी स्कूल बंद हो चुके है और इस दौरान भारत में प्राइवेट स्कूलों की सं या में लगभग 42,944 की उल्लेखनीय वृद्धि हुई है, ऐसा सरकारी आंकड़े और यूनेस्को की रिपोर्ट बताती हैं। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, बेहतर स्वास्थ्य सुविधा और योग्यतानुसार रोजगार या व्यवसाय उपलब्धता ये तीन बाते मनुष्य को सहज उपलब्ध होनी चाहिए। इसमें कभी भी भेदभाव या आर्थिक विषमता रूकावट नहीं होनी चाहिए। देखा जाए तो देश का पूरा भविष्य उस देश की शिक्षा निति और उसकी गुणवत्ता पर निर्भर करती हैं। अच्छी शिक्षा समाज और देश के प्रत्येक क्षेत्र में काबिल और जि मेदार कर्तृत्वशैली युक्त प्रभावी युवा शक्ति का निर्माण करती हैं। शिक्षा से संस्कार, ज्ञान, कौशल और सुजान नागरिक बनकर व्यक्ति देश और विश्व में पथप्रदर्शित करते हैं। विकसित देशों का उदाहरण हमारे सामने है, ओलंपिक जैसे विश्व स्तरीय खेलों में छोटे - छोटे देश पदक तालिका में ऊपर होते हैं। जो देश उन्नत हुए, वे अपने मजबूत और कौशल्यपूर्ण शिक्षा प्रणाली के बलबूते पर। आनेवाला कल भी उसी देश का उज्जवल होगा, जो शिक्षा के गुणवत्ता को समझेगा।

परंपरागत ज्ञान से पर्यावरण बचाने की राह

बाबा मायाराम

लोकविज्ञान चाहे वह खेती व सिंचाई से संबंधित हो या जंगल में पाए जाने वाले औषधि या पौधे हों, आज भी वृद्ध लोगों के पास सुरक्षित है। स्थानीय और परंपरागत ज्ञान आज पर्यावरण व जैव विविधता के संरक्षण व संवर्धन में महत्वपूर्ण माने जाते हैं। इसके साथ आधुनिक ज्ञान को सीखकर, दोनों के मेल से पर्यावरण व जैव विविधता का संरक्षण किया जा सकता है। मौजूदा समय में देश और दुनिया में पर्यावरण संकट की चर्चा चल रही है। यह वैश्विक समस्या है, लेकिन स्थानीय स्तर पर भी कुछ किया जा सकता है। इसमें ऐसे समुदाय जो प्रकृति के साथ सामंजस्य बनाकर रहते आए हैं, उनके परंपरागत ज्ञान काफी सहायक हो सकता है। मैंने ल बे अरसे से देश भर में घूम-घूमकर ऐसे समुदायों से बातचीत की है, और उसके आधार पर रिपोर्टिंग की है। आज इस कॉलम में इस पर बात करना चाहूंगा, जिससे स्थानीय समुदायों के परंपरागत ज्ञान को समझा जा सके और उसके साथ आधुनिक ज्ञान को जोड़कर समस्याओं का समाधान किया जा सके। पर्यावरण और समुदायों की आजीविका की रक्षा की जा सके।

अक्सर, जब कभी हम इतिहास की बात करते हैं, तब हम यह सोचते हैं कि यह मोटी-मोटी किताबों, दस्तावेजों, और पुस्तकालय के ग्रंथों में मिलेगा। लेकिन यह तो हमारे आसपास और परिवेश में भी है। हमें सिर्फ बुजुर्ग और अनुभवी लोगों से सवाल पूछना है और वे हमें बताएंगे, अपने प्रत्यक्ष अनुभव सुनाएंगे, कबीर की तरह आंखों देखी बताएंगे। वे सुनी-सुनाई बातें ही नहीं, आपबीती बताएंगे। याददाश्त के आधार पर बचपन और अपने काम-धंधे से जुड़े व अपने जमाने के किस्से बताएंगे। इसे मौखिक इतिहास व मौखिक ज्ञान भी कह सकते हैं। और यह सब आंचलिक स्थानीय भाषा में ही उपलब्ध है और उसे साक्षात्कार और बातचीत के माध्यम से जाना जा सकता है।

बरसों से खेती करने वाले किसान हमें बताएंगे यहां परंपरागत खेती-किसानी कैसी थी, क्या-क्या फसलें उगाई जाती थीं, कब बोई जाती थीं, किस तरह की मिट्टी मे बोई जाती थी, उसके तरीके क्या थे? हल-बक्खर कब चलाना है, बोवनी कब करनी है। जब सिंचाई की व्यवस्था नहीं हुआ करती थी तब कौन सी फसलें उगाई जाती थीं? सिंचाई आने के बाद फसलचक्र में क्या बदलाव आया? वे बताएंगे, बीमार आदमी का इलाज कैसे किया जाता है, किसी की अगर हड्डी टूट जाती है तो कौन सी जड़ी लगाई जाती है, हंसिया या कुल्हाड़ी की चोट पर कौन से पेड़ की छाल पीसकर लगाते हैं? वे बताएंगे कि बारिश कम क्यों होती है? पहले झड़ी लगती थी और अब क्यों पानी नहीं गिरता? सदानीरा नदियों का पानी क्यों सूख गया? बारहमासी नदियां अब बरसाती नालों में कैसे बदल गई? वे साल दर साल क्यों दम तोड़ रही हैं? ज्यादा कुरेदेंगे तो वे यह भी बता सकते हैं ये सूखी नदियां पुनर्जीवित कैसे हो सकती हैं? भूजल क्यों टाइम बम की तरह नीचे चला जा रहा है? ऐसी कई जानकारियां आपको अपने इलाके के बारे में सहज ही मिल जाएगी।

हमें ऐसे ढेरों किस्से मिल जाएंगे जिनसे हम अनजान थे। हमें लोकविद्या के ऐसे कई सूत्र हाथ लग जाएंगे, जिससे हम अपना जीवन संवार सकते हैं, बेहतर कर सकते हैं, परिवेश बदल सकते हैं। क्योंकि आधुनिक रासायनिक खेती मुनाफे से संचालित है, जबकि परंपरागत खेती भोजन की जरूरत पूरी करने के लिए विकसित हुई थी। उसके तौर-तरीके किसानों ने ही विकसित किए थे। यह सब हमें किसी खेत की मेढ़ पर या किसी पेड़ की छांव में बैठकर बतियाते पता चल सकता है। इस मामले में हम अपने आपको खुशकिस्मत समझेंगे कि हमारे देश के किसान या बुजुर्ग थोड़ी-बहुत पहचान के बाद उनके दुख-दर्द, अनुभव और आपबीती बिना झिझक के बताते हैं। वे धाराप्रवाह बताते चले जाते हैं कि हमें ऐसा लगेगा ही नहीं कि हम उनसे पहली बार बात कर रहे हैं। मध्यप्रदेश के होशंगाबाद (अब नर्मदापुरम नाम है) जिले में पिछले कुछ वर्षों से जनजीवन से सीधे जुड़े जनमुद्दों पर मैंने गांव के कई लोगों से बातचीत की है। यह बातचीत स्थानीय भाषा बुंदेली (जो बुंदेली का रूप इस इलाके में बोला जाता है) में की गई। यह सहज संवाद नहीं, साक्षात्कार था जिसमें मुद्दों का एक फेमवर्क होता है और बातचीत आगे बढ़ती जाती है। लेकिन कभी-कभी मुझे प्रश्नावली को एक तरफ उनकी ही किसी बात के सिरे को पकड़कर आगे बात करनी पड़ती है। ये मुद्दे थे- खेती-किसानी, आदिवासी और विस्थापन पर्यावरण-जल, जंगल, स्थानीय समुदायों की आजीविका इत्यादि। इस बातचीत पर आधारित लेख भी लिखे। ज़्यादा जानें बॉलीवुड समाचार साक्षात्कार कौशल प्रशिक्षण बॉलीवुड समाचार पत्रिका संपादकीय लेख बजट 2019 मनोरंजन पत्रिका डिजिटल मार्केटिंग सेवाएँ ई-पेपर प्रमुख समाचार समाचार पत्र वितरण सेवा इस समय खेती-किसानी पर अभूतपूर्व संकट मंडरा रहा है। बार-बार किसान फसलचक्र बदल रहे हैं। कभी सोयाबीन तो कभी गन्ना। सोयाबीन में लगातार घाटा हो रहा है। पहले सोयाबीन यहां काफी फला-फूला है, लेकिन अब लगभग न के बराबर है। एक-दो सालों से गन्ने की ओर किसान मुड़े लेकिन समय पर उचित दाम नहीं मिलने से किसानों को निराशा ही हाथ लगी। मैदानी क्षेत्र में पहले की हल-बैल की खेती की जगह ट्रेक्टर से खेती हो रही है। हारवेस्टर से कटाई हो रही है जिससे लोगों का रोजगार भी प्रभावित हुआ है। जबकि जंगल क्षेत्र में अब भी किसान अपनी हल-बैल और कुछ हद तक देसी बीजों की खेती कर रहे हैं। यहां खेती बारिश पर निर्भर है यानी सूखे की खेती है। इस इलाके में उतेरा या गजरा पद्धति प्रचलन में है। इसके तहत किसान एक साथ चार-पांच फसलों को मिलाकर बोते हैं। जैसे धान के साथ तुअर, तिल्ली, ज्वार इत्यादि। किसानों का कहना है कि अगर हमारी एक फसल मार खा जाती है तो दूसरी से इसकी कमी पूरी हो जाती है। कई फसलें एक साथ बोने से पोषक तत्वों का चक्र बराबर चलता रहता है। अनाज के साथ फलियां बोने से नत्रजन आधारित बाहरी निवेशों की जरूरत कम पड़ती है। फसलों के डंठल तथा पुआल उन मवेशियों को खिलाने के काम आती है जो जैव खाद पैदा करते है। धान की करधना, झीना, भदेल जैसी कम पानी वाली किस्में भी प्रचलन में है। कम पानी या पानी नहीं होने के कारण तुअर और चना की फसल प्रमुख रूप से होती हैं।

विद्याअर्जन के दो स्त्रोत माने जाते हैं। एक है-किताबी और दूसरा है-अनुभव आधारित। इस इलाके के लोग मौखिक परंपरा के वाहक हैं, लिखित नहीं। पहले तो शिक्षा ही नहीं थी। आजादी के बाद हमारी पहली या दूसरी पीढ़ी शिक्षित हो रही है। बिना पढ़े-लिखे लोगों ने ही खेती-बाड़ी, पानी का काम, तालाब, बावड़ी, कुंओं का निर्माण, जड़ी-बूटियों की जानकारी, बांस के सामान सब कुछ अनुभव से सीखा और बढ़ाया। यह कौशल अनुभव से प्राप्त होता है। जो लोकविद्या का भी स्रोत है। हाल के वर्षों में इतिहासकारों ने भी मौखिक परंपरा द्वारा स्थानीय इतिहास के विभिन्न पहलुओं पर महत्वपूर्ण जानकारी एकत्र की है। राजनीति शास्त्रियों और नृतत्वशास्त्रियों ने अपने अध्ययन के लिए साक्षात्कार का उपयोग किया है। स्थानीय वृद्ध लोगों से बातचीत कर आदिवासी पारंपरिक जीवनशैली व संस्कृति के अध्ययन के साथ ही प्राकृतिक संसाधनों-जल, जंगल, जमीन के पारंपरिक उपयोग, स्वामित्व व प्रबंधन के बारे में जाना जा सकता है। लोकविज्ञान चाहे वह खेती व सिंचाई से संबंधित हो या जंगल में पाए जाने वाले औषधि या पौधे हों, आज भी वृद्ध लोगों के पास सुरक्षित है। बहरहाल, मेरे लिए बरसों बाद अपने क्षेत्र को नजदीक से जानने का यह काम काफी रोमांचक, दिलचस्प और ज्ञानवर्द्धक है। स्थानीय और परंपरागत ज्ञान आज पर्यावरण व जैव विविधता के संरक्षण व संवर्धन में महत्वपूर्ण माने जाते हैं।

विविध समाचार

नशेड़ी पोते ने गले में चाकू मार की दादी की हत्या, फिर लाश पर गैस सिलेंडर रख ऊपर से चादर डाल छिपाया

मोहाली २३/०१ (संवाददाता): पंजाब के मोहाली जिले के डेराबस्सी कस्बे में दिल दहला देने वाली वारदात सामने आई है। नशे की हालत में धुत एक युवक ने अपनी 85 वर्षीय दादी की गले पर चाकू से वार कर हत्या कर दी। हत्या के बाद उसने शव को छिपाने की कोशिश में कपड़े में लपेटकर उसके ऊपर गैस सिलेंडर रख दिया।

मृतका की पहचान गुरबचन कौर के रूप में हुई है, जबकि आरोपी पोते का नाम आशीष बताया गया है। पुलिस ने मौके से दादी के गले में फंसा हुआ चाकू बरामद किया है। प्रारंभिक जांच में सामने आया है कि आरोपी ने वारदात के समय भारी मात्रा में शराब पी रखी थी। थाना डेराबस्सी प्रभारी सुमित मोर ने बताया कि आरोपी शराब का आदी है और नशे की लत को लेकर अकसर अपनी दादी से झगड़ा करता था। बुधवार दोपहर वह शराब के नशे में घर पहुंचा और मामूली कहासुनी के बाद किचन से चाकू उठाकर दादी के गले पर वार कर दिया। हत्या के बाद आरोपी ने शव छिपाने का प्रयास किया और घर से फरार हो गया। पुलिस ने उसे थोड़ी देर बाद ही पकड़ लिया।

आरोपी की मां, जो एक स्कूल टीचर हैं, ने बताया कि जब वे दोपहर करीब 2रू50 बजे स्कूल से लौटीं, तो बेटे आशीष ने उन्हें देखते ही घर से भागने की कोशिश की। घर में दाखिल होकर उन्होंने अपनी सास को खून से लथपथ हालत में मृत पाया। उन्होंने तुरंत पुलिस को सूचना दी। परिवार के अनुसार, आशीष 12वीं तक पढ़ा हुआ है और पिछले कुछ महीनों से बेरोजगार था। कुछ समय पहले उसका एक युवती से ब्रेकअप हुआ था, जिसके बाद वह मानसिक रूप से टूट गया और नशे का आदी बन गया। घरवाले उसे नशा छोड़ने के लिए कहते थे, जिस पर वह अकसर झगड़ने लगता था। पुलिस ने आरोपी आशीष को हिरासत में लेकर पूछताछ शुरू कर दी है।

थाना प्रभारी सुमित मोर ने बताया कि घटना स्थल की वीडियोग्राफी कर साक्ष्य जुटाए गए हैं। आरोपी के खिलाफ हत्या का मामला दर्ज किया गया है और आगे की कार्रवाई जारी है।

एएसआई संदीप लाठर की आत्महत्या मामला : आईपीएस पूरन की पत्नी और एमएलए भाई पर एफआईआर दर्ज, परिवार का पोस्टमॉर्टम से इनकार

रोहतक २३/०१ (संवाददाता): हरियाणा में सीनियर IPS अधिकारी वाई. पूरन कुमार पर गंभीर आरोप लगाकर आत्महत्या करने वाले ASI संदीप लाठर के परिजनों ने अब पोस्टमॉर्टम से इनकार कर दिया है। परिजनों की शिकायत पर पुलिस ने IPS की पत्नी अमनीत कुमार, उनके भाई आप विधायक अमित मान और गनमैन सुशील के खिलाफ FIR दर्ज कर ली है। परिवार ने शव को फिलहाल रोहतक जिले के लाढ़ौत गांव में अपने मामा के घर रखा हुआ है। रातभर ग्रामीण और रिश्तेदार वहीं डटे रहे। परिजनों का कहना है कि जब तक सरकार और पुलिस प्रशासन द्वारा ठोस कार्रवाई नहीं की जाती, वे पोस्टमॉर्टम नहीं करवाएंगे। रोहतक के ASP शशि शेखर,ैक्ड आशीष कुमार और मुख्यमंत्री के OSD विरेंदर सिंह ने परिजनों से मुलाकात कर समझाने की कोशिश की, लेकिन परिजन रात तक तैयार नहीं हुए। बुधवार सुबह मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी, कैबिनेट मंत्री कृष्ण लाल पंवार और महिपाल ढांडा स्वयं लाढ़ौत गांव पहुंचे और शोक संतप्त परिवार को सांत्वना दी। इसके अलावा पूर्व मुख्यमंत्री भूपेंद्र सिंह हुड्डा, इनेलो प्रमुख अभय चौटाला और नेता सुनैना चौटाला ने भी परिजनों से मुलाकात की। बता दें कि मंगलवार दोपहर करीब 1 बजे, ASI संदीप लाठर ने धामड़ रोड स्थित मामा के खेतों में बने कोठड़े की छत पर अपनी सर्विस रिवॉल्वर से गोली मारकर आत्महत्या कर ली थी। घटनास्थल से एक वीडियो और चार पेज का सुसाइड नोट बरामद हुआ है, जिसमें संदीप ने IPS वाई. पूरन कुमार पर भ्रष्टाचार और मानसिक उत्पीड़न के गंभीर आरोप लगाए हैं। पुलिस अधिकारियों ने बताया कि सुसाइड नोट और मोबाइल वीडियो को फॉरेंसिक जांच के लिए भेज दिया गया है। मामले की जांच सीनियर पुलिस अधिकारियों की निगरानी में जारी है। वहीं प्रशासन ने परिवार से अपील की है कि पोस्टमॉर्टम के बाद अंतिम संस्कार की प्रक्रिया आगे बढ़ाई जाए ताकि जांच सुचारू रूप से चल सके।

हरियाणा सरकार का एक साल : कई संकल्प पूरे... मगर चुनौतियां बरकरार

चंडीगढ २३/०१ (संवाददाता): हरियाणा के इतिहास में पहली बार किसी राजनैतिक दल ने लगातार तीसरी बार सत्ता की कुर्सी हासिल की है। 17 अक्तूबर 2024 को मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी व उनके 13 मंत्रियों ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की मौजूदगी में पंचकूला के परेड ग्राउंड में शपथ ली। सत्ता संभालने के अगले ही दिन राज्य सरकार ने किडनी रोग से पीड़ितों को मुफ्त डायलिसिस व अनुसूचित जाति के आरक्षण को दो वर्गों में वर्गीकरण कर वंचित अनुसूचित जातियों को सौगात दी। इसके अलावा भी कई छोटे–बड़े फैसले लिए गए, जिनमें लाडो लक्ष्मी योजना, शामलात भूमि पर 20 वर्षों से काबिज पट्टेदारों को भूमि का मालिकाना हक, अग्निवीरों को पुलिस की भर्तियों में 20 फीसदी कोटा, पीएम विद्यालक्ष्मी योजना, मुख्यमंत्री ग्रामीण आवास योजना के तहत 4533 लाभार्थियों को प्लॉट देने संबंधी फैसले शामिल रहे। राज्य सरकार का दावा है कि चुनाव में किए 217 संकल्प में से 48 संकल्पों को पूरा कर दिया गया है। वहीं, दूसरी ओर कुछ ऐसे मुद्दे भी रहे, जिनसे सरकार को जूझना पड़ा। गुरुग्राम में जलभराव की स्थिति, बिगड़ती कानून व्यवस्था, आपदा से बर्बाद फसलों कम मुआवजा व खाद संकट जैसे कई मुद्दों पर विपक्ष सरकार को निशाने पर लेता रहा। वहीं, कई ऐसे भी मौके आए, जब सरकार को असहज स्थिति का सामना करना पड़ा। वाई पूरण प्रकरण मामले को मैनेज करने में सरकार असफल रही, जिससे राज्य सरकार को अपनी पहली वर्षगांठ में पीएम मोदी की रैली को स्थगित करना पड़ा। राज्य सरकार जश्न भी नहीं मना पाई। अनुसूचित जाति में कोटे में कोटा रू सत्ता संभालते ही हरियाणा सरकार ने अनुसूचित जाति में नौकरियों के लिए कोटे के अंदर कोटे का प्रावधान किया। हरियाणा सरकार अपने कार्यकाल के पहले ही साल लाडो लक्ष्मी योजना को लागू कर दिया। एक नवंबर से लाभार्थी महिलाओं को हर महीने 2100 रुपये दिए जाएंगे। सरकारी अस्पतालों और मेडिकल कॉलेज में किडनी मरीजों को मुफ्त डायलिसिस की सौगात दी गई है। पिछले साल इस योजना की शुरुआत हुई थी। हिसार एयरपोर्ट से अयोध्या, चंडीगढ़, दिल्ली और जयपुर के लिए उड़ान का शुरू होना भी राज्य सरकार के लिए बड़ी उपलब्धि है।अब से अहमदाबाद और जम्मू के लिए उड़ान शुरू की जानी है। कैग के मुताबिक हरियाणा उन राज्यों की श्रेणी में सबसे आगे है, जो लिए गए लोन की सबसे ज्यादा अदायगी करता है। हरियाणा सरकार कुल खर्चे का 16.67 फीसदी पैसा सिर्फ ब्याज में चुका रहा है। इस सूची में दूसरे नंबर पर पंजाब (16.35) फीसदी, तीसरे नंबर पर पश्चिम बंगाल, (16.31), चौथे नंबर पर केरल (15.86), पांचवें नंबर पर तमिलनाडु (14.36) और छठे नंबर पर राजस्थान (12.42) फीसदी है। कई प्रयासों के बावजूद हरियाणा में अपराध पर अंकुश नहीं लग पा रहा है। आए दिन रंगदारी और हत्या की घटना सामने आती रहती है। कुछ दिन की सख्ती के बाद गैंगस्टर फिर से सिर उठाने लगते हैं। हरियाणा में हरियाणा में 80 गैंग सक्रिय है। हर साल किसानों को डीएपी व यूरिया के संकट से जूझना पड़ता है, जिसकी वजह से किसान समय पर बुवाई नहीं कर पाते। इससे किसानों को प्रत्येक साल निम्न स्तर की फसल से जूझना पड़ता है। हरियाणा में कई एकड़ खेत सेम की समस्या से जूझ रहे हैं तो वहीं, बारिश के दिनों में गुरुग्राम में जलभराव की समस्या सामने आती है। इस समस्या से राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हरियाणा की इमेज को धक्का लगता है। राज्य सरकार का दावा करती है कि अब तक करीब 40 हजार से ज्यादा लोगों को नौकरियां दी गई हैं। इनमें 24 हजार वे नौकरियां भी शामिल हैं, जो पिछले कार्यकाल में घोषित की गई थी। वहीं, सीईटी का आयोजन तो सफलतापूर्वक कर दिया, मगर अभी तक न तो परिणाम जारी हुआ और न ही करेक्शन के लिए पोर्टल खुला। पूर्व सीएम भूपेंद्र सिंह हुड्डा ने वर्तमान सरकार को एक साल के कार्यकाल में पूरी तरह विफल बताया।

मालिक का बेटे की तरह घोड़े से अनोखा प्रेम, 'फतेहजंग' की मौत पर रखवाया भोग समागम, छपवाए कार्ड

लुधियाना २३/०१ (संवाददाता): इंसानों और जानवरों के बीच प्रेम की कई कहानियां आपने सुनी होंगी, लेकिन लुधियाना से एक ऐसी कहानी सामने आई है जो इस रिश्ते को एक नई गहराई देती है। यहां खासी कलां के रहने वाले चरणजीत सिंह मिंटा अपने घोड़े फतेहजंग की मौत से इस कदर दुखी हुए कि उन्होंने उसकी आत्मिक शांति के लिए बकायदा भोग समागम का आयोजन किया। इसके लिए उन्होंने विधिवत कार्ड छपवाए और गुरुद्वारा साहिब में कार्यक्रम रखकर सभी रिश्तेदारों और परिचितों को आमंत्रित किया। चरणजीत सिंह मिंटा के लिए फतेहजंग सिर्फ एक घोड़ा नहीं, बल्कि उनके परिवार का सदस्य और उनके तीन बेटों में से एक था। उनके दो बेटे, गुरइकबाल सिंह और मनलोचन सिंह, क्रमशः ऑस्ट्रेलिया और अमेरिका में रहते हैं। जब भी कोई उनसे उनके बच्चों के बारे में पूछता, तो वे हमेशा कहते कि उनके तीन बेटे हैं, और तीसरे बेटे का नाम फतेहजंग सिंह है जो हिंदुस्तान में रहता है। मिंटा बताते हैं कि घोड़े पालना और उनसे प्रेम करना उनके खून में है।

उनका परिवार तीन पीढ़ियों से घोड़े पालता आ रहा है। 38 महीने का फतेहजंग उनके घर में ही पैदा हुआ था और अपने नीले रंग और दोस्ताना स्वभाव के कारण वह और उनकी पत्नी उसे अपने बच्चे की तरह मानने लगे थे। बच्चे विदेश में होने के कारण उनका सारा दिन फतेहजंग के साथ ही गुजरता था। फतेहजंग पूरे उत्तर भारत में प्रदर्शनियों में एक जाना–माना नाम था और लोग उसे बहुत पसंद करते थे। इसी साल वे उसे जोधपुर के महाराजा के पास भी लेकर गए थे, जहां उसकी खूब प्रशंसा हुई थी। बीती 8 अक्टूबर को फतेहजंग की अचानक तबीयत खराब हो गई और उसकी मौत हो गई। जांच में पता चला कि उसके अंगों ने अचानक काम करना बंद कर दिया था। इस घटना से चरणजीत सिंह को गहरा आघात लगा और वह उदासी में डूब गए। उनकी हालत देखकर पटियाला से आए उनके रिश्तेदारों ने उन्हें नीले रंग का एक नया घोड़ा उपहार में दिया। चरणजीत सिंह ने अपने 'बेटे' की याद में इस नए घोड़े का नाम भी फतेहजंग ही रखा है।

भाजपा की 'आप' विधायकों के फर्जी हस्ताक्षरों के जरिए राज्यसभा सीट हड़पने की कोशिश बेनकाब : अमन अरोड़ा

चंडीगढ़२३/०१ (संवाददाता): पंजाब आम आदमी पार्टी (आप) के अध्यक्ष अमन अरोड़ा ने मंगलवार को भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) और केंद्र सरकार पर लोकतंत्र की हत्या और अपराधियों को बचाने के गंभीर आरोप लगाये हैं। विधायक फौजा सिंह सरारी, रजनीश दहिया और वरिष्ठ नेता नील गर्ग के साथ एक प्रेस कॉन्फ्रेंस को संबोधित करते हुए श्री अरोड़ा ने कहा कि चंडीगढ़ महापौर चुनाव की तरह ही भाजपा की एक बार फिर 'आप' विधायकों के फर्जी हस्ताक्षरों से राज्यसभा में अपने व्यक्ति को भेजने की कोशिश बेनकाब हुई है। अरोड़ा ने कहा कि यह मामला बहुत गंभीर और संगीन है। भाजपा और केंद्र सरकार द्वारा लगातार लोकतंत्र को खत्म करने की कोशिशें की जा रही हैं, जिसकी ताजा मिसाल आज चंडीगढ़ में देखने को मिली है। उन्होंने कहा कि चंडीगढ़ मेयर चुनाव के दौरान, जैसे अनिल मसीह ने बेशर्मी से वोट रद्द करके लोकतंत्र की हत्या की थी, उससे भी संगीन हालात अब भाजपा ने राज्यसभा सीट के लिए पैदा कर दिये हैं। उन्होंने पूरे घटनाक्रम का खुलासा करते हुए बताया कि श्री अरोड़ा के इस्तीफे के बाद खाली हुई राज्यसभा सीट के लिए नवनीत चतुर्वेदी नामक व्यक्ति ने नामांकन पत्र दाखिल किया। उन्होंने कहा कि नामांकन भरना हर किसी का हक है, लेकिन फर्जीवाड़े से देश की सबसे पवित्र पंचायत (संसद) में पहुंचना लोकतंत्र की पीठ में छुरा मारने के बराबर है। उन्होंने दस्तावेज दिखाते हुए बताया कि छह अक्टूबर को नवनीत चतुर्वेदी ने 'आप' के 10 विधायकों के नाम बिना हस्ताक्षरों के प्रस्तावक के तौर पर दाखिल किये। फिर 13 अक्टूबर को उसने 10 और नये विधायकों के नामों के साथ एक और नामांकन पत्र दाखिल किया, जिसमें विधायक रजनीश दहिया और फौजा सिंह सरारी समेत कई अन्य विधायकों के फर्जी हस्ताक्षर थे।

पंजाबी बोली ओलंपियाड करवाएगा पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड, पंजीकरण शुरु : परसराम प्रभाकर

जालंधार २३/०१ (संवाददाता): पंजाब, पंजाबी और पंजाबियत को बढ़ावा देने के लिए पंजाब सरकार के प्रयासों के अंतर्गत पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड द्वारा तीसरा अंतर्राष्ट्रीय पंजाबी भाषा ओलंपियाड करवाया जा रहा है। इस चल रहे ओलंपियाड में प्रिंटर्स एसोसिएशन के सदस्यो ने विशेष रुप से भाग लिया और अपने अपने विचार दिए। बैठक में प्रिंटर्स एसोसिएशन पंजाब के महासचिव परसराम प्रभाकर ने बताया कि बैठक में डॉ. अमरनाथ सिंह आई.ए.एस. (सेवानिवृत्त) चेयरमैन पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड ने बताया है कि पंजाबी ओलंपियाड में विद्यार्थियों का पंजीकरण 15 अगस्त से शुरू हो गया था, जिसे भारी समर्थन मिल रहा है और विद्यार्थियों के लिए 31 अक्तूबर तक पंजीकरण करवाने का सुनहरा अवसर है। महासचिव परसराम प्रभाकर ने कहा कि पंजाबी ओलंपियाड के आयोजन का मुख्य उद्देश्य देश–विदेश में रहने वाले पंजाबियों को अपनी समृद्ध विरासत से जोड़ना और पंजाबी भाषा की समृद्ध विरासत को संरक्षित और प्रोत्साहित करना है। इस ओलंपियाड कृ का विशेष आकर्षण यह है कि इस वर्ष विजेता विद्यार्थियों को नकद पुरस्कार से सम्मानित करने के साथ–साथ उन स्कूलों और अध्यापकों को भी विशेष सम्मान दिया जाएगा जो ओलंपियाड में अधिकतम विद्यार्थियों का पंजीकरण करवाएंगे।

बताया गया कि प्राथमिक वर्ग (8 से 12 वर्ष) के लिए पंजीकरण शुल्क 50 रु पए रखा गया है, जो पहले 100 रु पए था। मध्यम वर्ग (12 से 14 वर्ष) और माध्यमिक वर्ग (14 से 16 वर्ष) के लिए पंजीकरण शुल्क 100 रु पए रखा गया है। एन.आर.आई. छात्नों के लिए पंजीकरण शुल्क 800 रु पए रखा गया है। पिछले वर्षों में प्रश्नों का आधार केवल तैयार सामग्री तक ही सीमति था, लेकिन इस बार इसके साथ ही आयु के अनुसार पाठ्यक्रम से प्रश्न भी शामिल किए गए हैं ताकि ओलंपियाड पाठ्यक्रम से जुड़ा रहे। इसके अलावा पिछले वर्षों में केवल ऑनलाइन परीक्षा आयोजित की गई थी, जबकि इस बार यह परीक्षा ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों मोड में आयोजित की जाएगी।

लागू, तंदूर, कूड़ा जलाने और तोड़फोड़ पर लगी रोक

झज्जर २३/०१ (संवाददाता):प्रदूषण का स्तर लगातार खराब हो रहा है। हवा जहरीली हो रही है। वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग (सीएक्यूएम) की ओर से ग्रैप–1 (ग्रेडेड रिस्पॉन्स एक्शन प्लान) लागू हो गया है। जैसे–जैसे प्रदूषण का स्तर बढ़ेगा पाबंदियां भी बढ़ती जाएंगी। ग्रैप–1 लागू होने के बाद तंदूर, कूड़ा जलाने और तोड़फोड़ पर रोक लगा दी गई है। हरियाणा राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड की ओर से भी सख्ती बरती जा रही है। बुधवार की सुबह क्षेत्र में स्मॉग छाया रहा। इसके कारण दोपहिया वाहन चालकों को आंखों में जलन की अनुभूति हुई। सुबह 8 बजे एक्यूआई 229 दर्ज किया गया। यह शाम 4 बजे 238 पर पहुंच गया। प्रदूषण रोकने में हरियाणा राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के अधिकारियों ने आमजन से भी सहयोग की अपील की है।

ओडिशा समाचार

कलिंग समाचार | राउरकेला, शनिवार 24 जनवरी 2026 | पृष्ठ-6

राउरकेला इस्पात संयंत्र में 58वें वार्षिक बागवानी प्रदर्शनी का उद्घाटन

राउरकेला २३/०१ (संवाददाता): राउरकेला इस्पात संयंत्र (आरएसपी) के उद्यानकृषि विभाग द्वारा आयोजित 58वीं वार्षिक उद्यान प्रदर्शनी-2026 का उद्घाटन जुबिली पार्क में निदेशक प्रभारी, श्री आलोक वर्मा, द्वारा किया गया। इस अवसर पर अध्यक्ष, दीपिका महिला संघति, श्रीमती नम्रता वर्मा, कार्यपलक निदेशक (मानव संसाधन),, श्री तरुण मिश्र, कार्यपालक निदेशक (खान विकास-सीएमएलओ),, श्री बी के गिरि, कार्यपलक निदेशक (सामग्री प्रबंधन), श्री अनिल कुमार, कार्यपालक निदेशक (खान, ओजीओएम-सीएमएलओ), श्री एम पी सिंह, कार्यपालक निदेशक (परियोजनाएँ), श्री सुदीप पाल चौधरी, मुज्य महाप्रबंधक (विज़ एवं लेखा), श्री राजेश दासगुप्ता, ओडिशा राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के श्री अनूप मल्लिक, दीपिका महिला संघति की उपाध्यक्षाएँ, श्रीमती प्रभाती मिश्र, डॉ. प्रतीज्ञा पलई, श्रीमती वंदना सिंह, श्रीमती रीता रानी एवं श्रीमती नवनीता पाल चौधरी, मुज्य महाप्रबंधक (नगर अभियांत्रिकी एवं उद्यानकृषि), श्री बी के जोजो, महाप्रबंधक (उद्यान कृषि) एवं प्रभारी (जेडडीपी), डॉ. अविजीत बिस्वास तथा आरएसपी के अन्य वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे। निदेशक-प्रभारी ने अन्य गणमान्यों के साथ प्रदर्शनी का भ्रमण किया और प्रदर्शित फूलों, फलों एवं पौधों की विविध श्रृंखला में गहरी रुचि दिखाई। उन्होंने पिछले 58 वर्षों से इस भव्य प्रदर्शनी के सफल आयोजन के लिए उद्यानकृषि विभाग के प्रयासों की सराहना की और कहा कि यह प्रदर्शनी क्षेत्र में अपनी विशिष्ट पहचान बना चुकी है तथा एक बहुप्रतीक्षित वार्षिक आयोजन के रूप में दूर-दूर से बागवानी प्रेमियों को आकर्षित करती है। मानव मन पर प्रकृति, विशेषकर फूलों की भूमिका पर जोर देते हुए, निदेशक प्रभारी ने सभा को संबोधित करते हुए कहा, फूल भावनाओं को शांत करके, विचारों को तरोताजा करके और शांति और आनंद की भावना को जगाकर मानव मन को स्पर्श करते हैं।इस प्रदर्शनी में कट फूल, गमले में लगे पौधे, फल, सज़्जियाँ, बोंसाई, डिनर बाउल अरेंजमेंट, सर्वश्रेष्ठ सुसज्जित फूल, बटन होल, गुलदस्ता, माला (गुलाब के अतिरिक्त) तथा फूलों और पज़्तियों से निर्मित मॉडल सहित विभिन्न श्रेणियों में 961 प्रविष्टियाँ देखने को मिलीं। जुबली पार्क में भारी संज़्या में दर्शक उमड़ पड़े और वहां प्रदर्शित विभिन्न प्रकार के फूलों, सज़्जियों और फलों की सराहना की, जिनमें गुलाब की किस्में, गुलदाउदी, डहलिया, डायन्थस, स्वीट पीज़, एंटीरिनम, कार्नेशन्स, कैलेंडुला, ज़्लोज़्स, पैंसी, जरबेरा, ल्यूपिन, गेंदा, एस्टर, साल्विया, ग्लैडियोली, कैंडीटज़्ट और कई अन्य शामिल थे। इस आयोजन में गार्डन लेआउट प्रतियोगिता भी शामिल है. जुबिली पार्क में बड़ी संज़्या में दर्शकों ने उपस्थिति दर्ज कराई और गुलाब, क्राइज़ेंथेमम, डहलिया, डायनथस, स्वीट पीज़, एंटीर्हिनम, कार्नेशन, कैलेंडुला, ज़्लॉज़्स, पैंसी, गर्बेरा, लुपिन, गेंदा, एस्टर, साल्विया, ग्लैडियोलस, कैंडीटज़्ट सहित अनेक किस्मों के फूलों, सज़्जियों एवं फलों की सराहना की। कार्यक्रम में गार्डन लेआउट प्रतियोगिता भी शामिल है। उप प्रबंधक (जन संपर्क), श्री सशंक शेखर पट्टनायक ने कार्यक्रम का मंच सञ्चालन किया. इस अवसर पर विद्यार्थियों एवं अन्य सांस्कृतिक दलों द्वारा एक आकर्षक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया।

श्रद्धालुओं का उत्साह, सोने के धनुष-बाण की यात्रा

भुवनेश्वर २३/०१ (संवाददाता): सोने, चांदी, लोहा, तांबा और पीतल के मिश्रण से बना 286 किलोग्राम का एक विशाल सोने का धनुष और बाण, पुरी श्रीक्षेत्र से अयोध्या के लिए अपनी औपचारिक यात्रा पर निकल पड़ा है, जिससे हजारों भक्त आकर्षित हो रहे हैं और पूरे ओडिशा में भक्ति का गहरा माहौल बन गया है। 8 फुट लंबी और लगभग 2.5 से 3 फुट ऊंची यह कलाकृति, सोमवार को एक भव्य धार्मिक जुलूस में आगे बढ़ने से पहले श्रीमंदिर की परिक्रमा पूरी की। भक्त सुबह से ही पवित्र अनुष्ठानों को देखने के लिए मंदिर परिसर में उमड़ पड़े, जबकि सेवादारों ने औपचारिक कार्यवाही में सक्रिय रूप से भाग लिया।

पूरे ओडिशा में यात्रा से धार्मिक उत्साह बढ़ा पवित्र धनुष और बाण ने राउरकेला से अपनी यात्रा शुरू की और तब से ओडिशा के कई हिस्सों से होकर गुज़रा है। हर पड़ाव पर, बड़ी संज़्या में भक्त दर्शन के लिए इकट्ठा हुए, जिससे जुलूस आस्था के एक चलते-फिरते उत्सव में बदल गया। इस यात्रा ने पूरे राज्य में धार्मिक उत्साह को काफी बढ़ा दिया है। अधिकारियों ने कहा कि इस कलाकृति को ज्योतिषीय सिद्धांतों के अनुसार सज़्ती से डिज़ाइन किया गया है, जिसमें सभी पांच प्राकृतिक तत्वों को सावधानीपूर्वक गणना किए गए अनुपात में मिलाया गया है, जिससे इसका आध्यात्मिक महत्व और बढ़ गया है।

शिल्प कौशल और आस्था का प्रतीक धनुष और बाण कीमती धातुओं और पारंपरिक शिल्प कौशल के एक अद्वितीय मिश्रण को दर्शाते हैं, जो भक्ति, कलात्मकता और सांस्कृतिक विरासत का प्रतीक है। भक्तों और देखने वालों ने इसे अनुष्ठान कला का एक दुर्लभ प्रतिनिधित्व बताया है, जो आध्यात्मिक परंपरा में गहराई से निहित है। इस यात्रा ने श्रीक्षेत्र के सांस्कृतिक महत्व को भी उजागर किया है, जो उन तीर्थयात्रियों को आकर्षित कर रहा है जो अयोध्या जाने से पहले पवित्र वस्तु को देखने के लिए उत्सुक हैं।

अयोध्या के साथ आध्यात्मिक संबंधों को मजबूत करना श्रीमंदिर में अनुष्ठानों के पूरा होने के बाद, औपचारिक जुलूस अयोध्या की ओर जारी रहेगा। अधिकारियों ने कहा कि यह आयोजन ओडिशा और पवित्र शहर के बीच आध्यात्मिक बंधन को मजबूत करता है, साथ ही राज्य की अनुष्ठान शिल्प कौशल की समृद्ध विरासत को भी प्रदर्शित करता है। सोने के धनुष और बाण की चल रही तीर्थयात्रा भक्ति और श्रद्धा को प्रेरित करती रहती है, जो आस्था, परंपरा और ओडिशा की स्थायी सांस्कृतिक विरासत का उत्सव मनाती है।

बीजद सस्पेंशन विवाद-श्रीमायी मिश्रा ने शीर्ष नेतृत्व पर उठाए सवाल

भुवनेश्वर २३/०१ (संवाददाता): बीजू जनता दल के विधायकों अरविंद मोहपात्रा और सनातन महाकुड के सस्पेंशन से नई राजनीतिक प्रतिक्रियाएं शुरू हो गई हैं, और पार्टी से निकाली गई नेता श्रीमयी मिश्रा ने एक बार फिर पार्टी नेतृत्व पर सार्वजनिक हमला किया है। सोमवार को, मिश्रा ने सोशल मीडिया पर क्छ्ष्ठ अध्यक्ष नवीन पटनायक को संबोधित करते हुए कई टिप्पणियां पोस्ट कीं, साथ ही वरिष्ठ नेता वी के पांडियन को भी निशाना बनाया। पार्टी अनुशासन के नाम पर दोनों विधायकों को सस्पेंड करने के फैसले पर सवाल उठाते हुए, मिश्रा ने आरोप लगाया कि उन्हें भ्रष्ट और गद्दार के रूप में दिखाया जा रहा है। उन्होंने आगे सवाल किया कि अनुशासनात्मक कार्रवाई के बाद पार्टी के अंदर बढ़ते असंतोष के बीच असली गद्दार कौन है।पार्टी नेतृत्व के खिलाफ आरोप अपनी पोस्ट में अप्रत्यक्ष रूप से नवीन पटनायक को संबोधित करते हुए, मिश्रा ने दावा किया कि पार्टी अध्यक्ष अपने ही फैसलों में फंस गए हैं। एक वरिष्ठ और सज़्मानित नेता के रूप में उनके कद को स्वीकार करते हुए, उन्होंने आरोप लगाया कि जिसे उन्होंने गैर-ओडिया तत्वों के प्रति उनकी पसंद बताया, वह बार-बार ओडिशा के लोगों को अपमानित कर रहा है। उन्होंने आगे आरोप लगाया कि जिसे उन्होंने नकली साधु कहा, उसे प्रभावी नियंत्रण सौंपकर नेतृत्व पार्टी कार्यकर्ताओं के लंबे समय के प्रयासों से बने संगठन को कमजोर कर रहा है। मिश्रा ने यह भी सवाल किया कि अगर पार्टी नेतृत्व निष्पक्षता स्थापित करना चाहता था, तो उसने सस्पेंड किए गए विधायकों के खिलाफ तथ्यों और सबूतों को सार्वजनिक ज़्यों नहीं किया। सैडिस्टिक प्लेजर वाली टिप्पणियां और कड़ी भाषा अपनी सोशल मीडिया पोस्ट में, मिश्रा ने आरोप लगाया कि ओडिया आत्म-सज़्मान को कमजोर करने के इरादे से जानबूझकर एक तमिल जोड़े को जिज़्मेदारियां सौंपी गईं। उन्होंने इस कदम को राजनीति नहीं बल्कि ओडिशा के लोगों को दुख पहुंचाकर जिसे उन्होंने सैडिस्टिक प्लेजर कहा, उसे पाने की कोशिश बताया। उन्होंने आगे कहा कि ओडिशा की मिट्टी उन लोगों को माफ नहीं करेगी जिन्हें उन्होंने विश्वासघात के ब्रांड एंबेसडर बताया, और पार्टी के मौजूदा नेतृत्व के दृष्टिकोण की अपनी आलोचना को रेखांकित करने के लिए कड़ी भाषा का इस्तेमाल किया। मिश्रा को निकाले जाने का बैकग्राउंड रिपोर्ट्स के अनुसार, श्रीमयी मिश्रा को पहले क्छ्ष्ठ से निकाल दिया गया था।

धामरा रेल मार्ग पर पैसेंजर ट्रेनों की मांग को लेकर भद्रक में विरोध प्रदर्शन

भद्रक २३/०१ (संवाददाता): भद्रक ज़िले के लोगों ने एक बार फिर भद्रक-धमारा रेलवे रूट पर पैसेंजर ट्रेन सर्विस शुरू करने की अपनी मांग तेज़ कर दी है। इस मांग के समर्थन में, भद्रक धमारा रेल संग्राम समिति के सदस्यों ने भद्रक ज़िला कलेज़्टर के ऑफिस के सामने विरोध प्रदर्शन किया। मालगाड़ियां चल रही हैं, पैसेंजर सर्विस अभी भी नहीं प्रदर्शनकारियों ने बताया कि इस रूट पर मालगाड़ियां तो नियमित रूप से चल रही हैं, लेकिन पैसेंजर ट्रेन सर्विस अभी तक शुरू नहीं हुई है, जिससे स्थानीय लोगों, छात्रों और मज़दूरों को काफी परेशानी हो रही है, जो सस्ते पज़्लिक ट्रांसपोर्ट पर निर्भर हैं। उन्होंने कहा कि बार-बार गुहार लगाने के बावजूद भी सालों से पैसेंजर सर्विस शुरू नहीं हुई है।किसानों के बलिदान को याद किया गया आंदोलनकारियों ने कहा कि यह रेलवे लाइन इस क्षेत्र के किसानों द्वारा अपनी उपजाऊ कृषि भूमि का बड़ा हिस्सा कुर्बान करने के बाद बनाई गई थी। हालांकि, उन्होंने आरोप लगाया कि स्थानीय लोगों को इसके बदले में अपेक्षित लाभ नहीं मिला है। प्रदर्शनकारियों ने रेलवे अधिकारियों और राज्य सरकार से इस रूट पर पैसेंजर ट्रेन सर्विस शुरू करने के लिए तुरंत कदम उठाने का आग्रह किया। भद्रक धमारा रेल संग्राम समिति के अध्यक्ष बिकाश नाथ ने कहा कि लगभग 25 साल पहले किसानों ने बहुत कम कीमत पर लगभग 1,000 एकड़ उपजाऊ ज़मीन दी थी। हमने बदले में कभी कुछ नहीं मांगा। हमारी एकमात्र उज़्मीद इस क्षेत्र के लोगों के लिए पैसेंजर ट्रेन सर्विस शुरू करना था। चूंकि ऐसा नहीं हुआ है, इसलिए अब हम अपनी मांग उठाने के लिए मजबूर हैं, उन्होंने कहा। आंदोलन तेज़ करने की चेतावनी समिति ने चेतावनी दी कि अगर उनकी मांग को नज़रअंदाज़ किया जाता रहा, तो आने वाले दिनों में आंदोलन और तेज़ किया जाएगा। इस बीच, ज़िला प्रशासन ने प्रदर्शनकारियों को आश्वासन दिया है कि उनकी चिंताओं को ज़रूरी कार्रवाई के लिए उचित अधिकारियों तक पहुंचाया जाएगा।

आरएसपी में रोलिंग मिल ऑपरेशन में सुरक्षा पर तीसरी सुरक्षा संचालन समिति की बैठक हुई शुरू

राउरकेला२३/०१ (संवाददाता): राउरकेला इस्पात संयंत्र (आरएसपी) द्वारा सेल सुरक्षा संगठन (एसएसओ), रांची के सहयोग से आयोजित रोलिंग मिल ऑपरेशन में सुरक्षा पर तीसरी सुरक्षा संचालन समिति की बैठक राउरकेला ज़्लब में शुरू हुई। आरएसपी के निदेशक प्रभारी (डीआईसी), श्री आलोक वर्मा ने मुज़्य अतिथि के रूप में उद्घाटन सत्र में भाग लिया और कार्यक्रम का उद्घाटन किया। कार्यपालक निदेशक (एसएस ओ- रांची), श्री के रामकृष्ण सज़्मानित अतिथि थे। मंच पर कार्यपालक निदेशक (खान विकास एवं सीएमएलओ), श्री बी के गिरि, कार्यपालक निदेशक (सामग्री प्रबंधन), श्रीअनिलकुमार, कार्यपालक निदेशक (खान, ओजीओएम, सीएमएलओ), श्री एम.पी. सिंह,कार्यपालक निदेशक (परियोजनाएं), श्री सुदीप पाल चौधरी, मुज़्य महाप्रबंधक प्रभारी (सेवाएं) और कार्यवाहक कार्यपालक निदेशक (वर्क्स), श्री आतिश चंद्र सरकार भी उपस्थित थे। श्री वर्मा ने अन्य गणमान्य व्यक्तियों के साथ डेढ़ दिन की बैठक की शुरुआत को चिह्नित करने के लिए औपचारिक दीप प्रज्वलन भी किया । यह उल्लेखनीय है कि कार्यक्रम में सेल, टाटा स्टील, आरआईएनएल, जेएस डज़्ल्यू, एनएमडीसी, एएमएन एस और मेकॉन की विभिन्न इकाइयों के लगभग 60 प्रतिनिधि भाग ले रहे हैं।

सभा को संबोधित करते हुए, श्री वर्मा ने कहा, सुरक्षा %परम धर्म% है। यह लाभ और उत्पादन से पहले आता है, और इस सिद्धांत पर कोई समझौता नहीं किया जा सकता है। उन्होंने रेखांकित किया कि सयंत्र गेट में प्रवेश करने वाले प्रत्येक व्यक्ति को सुरक्षित रूप से घर लौटना चाहिए, यह कहते हुए कि यह सभी कर्मचारियों द्वारा किया गया सामूहिक वादा होना चाहिए। उन्होंने कहा हमें ठेका श्रमिकों सहित कार्यबल के बीच आत्मविश्वास की एक मज़बूत भावना पैदा करनी होगी, ताकि हर कोई आश्वस्त महसूस करे कि कार्यस्थल सुरक्षित है और उसकी देखभाल की जाती है । रोलिंग मिल संचालन का उल्लेख करते हुए, उन्होंने बताया कि उच्च गति वाले उपकरण, हाइड्रोलिक सिस्टम, गैस लाइनें और केबल गैलरी उच्चतम स्तर की उचित परिश्रम और सुरक्षा प्रोटोकॉल के सख़्त पालन की मांग करते हैं। डीआईसी ने शॉपज़्लोर प्रबंधकों को हर दिन अपनी टीमों के साथ सुरक्षा बातचीत करने और प्रत्येक कार्यकर्ता को सुरक्षा चिंताओं के बारे में खुलकर बोलने के लिए प्रोत्साहित करें।

बैठक के महत्व पर प्रकाश डालते हुए, श्री रामकृष्ण ने कहा कि इस तरह के मंच इकाइयों में सुरक्षा नेटवर्क को मज़बूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं और एक-दूसरे के अनुभवों से सीखने के लिए एक मूल्यवान मंच प्रदान करते हैं। उन्होंने कहा कि सुरक्षा एक कभी न ख़त्म होने वाली यात्रा है और सुरक्षा प्रथाओं में निरंतर सीखने और सुधार का आह्वान किया। उन्होंने दोहराया कि संगठन सुरक्षा चूक के प्रति शून्य-सहिष्णुता दृष्टिकोण का पालन करता है और सुरक्षा के लिए सेल की प्रतिबद्धता की पुष्टि करता है। इस अवसर पर बोलते हुए, श्री सरकार ने सभी कर्मचारियों के लिए एक सुरक्षित कार्यस्थल बनाने के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने सुरक्षा प्रणालियों को मज़बूत करने, निगरानी बढ़ाने और दुर्घटनाओं को रोकने के लिए उपलज़्ध तकनीकी और डिजिटल उपकरणों का प्रभावी ढंग से लाभ उठाने पर ज़ोर दिया।

मुज़्य महाप्रबंधक (एच.एस.एम एवं औज़िसलिअरी), श्री सुब्रत कुमार ने स्वागत भाषण दिया, जबकि मुज़्य महाप्रबंधक (सुरक्षा और अग्निशमन सेवाएँ श्री हीरालाल महापात्रा ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापित किया । वरिष्ठ प्रबंधक (एचएसएम-द्ध), श्री अनूप अग्रवाल और प्रबंधक (एसपीपी), श्री शज़्स गजली ने उद्घाटन सत्र का समन्वय किया। उद्घाटन के दिन, विभिन्न इकाइयों की टीमों ने %रोलिंग मिल्स में सुरक्षाः भविष्य की संभावनाएं और चुनौतियां, औद्योगिक स्वचालन और डिजिटलीकरण के माध्यम से रखरखाव और प्रक्रिया में सुरक्षा ख़तरों को कम करना% पर विस्तृत प्रस्तुतियां दीं, जो लंबे और ज़्लैट उत्पादों के रोलिंग से संबंधित हैं।